

CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2026 with Solution PDF-Set 2/3/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)



निर्धारित समय: 3 Hours

अधिकतम अंक: 80

सामान्य निर्देश

- (i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 12 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- (ii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
- (iii) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. निःशब्द धीमी चाल और सदियों का साक्षी – जब कोई प्राणी हमारी धरती पर प्रकृति का सबसे शांत लेकिन सबसे मज़बूत प्रहरी बनकर खड़ा हो, तो उसका महत्त्व केवल जैव-विविधता तक सीमित नहीं रह जाता, वह हमारी संस्कृति, चेतना और पर्यावरण की आत्मा बन जाता है। कछुआ, जो समय की रेत पर अपने धैर्य और दीर्घायु के पदचिह्न छोड़ता आया है, आज खतरे में है। 23 मई को मनाया जाने वाला विश्व कछुआ दिवस केवल एक दिन नहीं, बल्कि पुकार है, उस मौन जीवन के लिए, जिसे हमने वर्षों तक नज़रअंदाज किया और जो आज हमसे बचाव की गुहार कर रहा है।

मान्यता है कि कछुए धरती पर करोड़ों वर्षों से अस्तित्व में हैं। उन्होंने हिम युगों, महाविनाशों और भूगर्भीय परिवर्तनों को झेला है। उनके अस्तित्व की स्थिरता, उनकी धीमी लेकिन स्थायी जीवन-शैली का प्रमाण है। मगर दुखद है कि आज जिन संकटों का वे सामना कर रहे हैं वे किसी प्राकृतिक आपदा के नहीं, बल्कि मानवीय लालच और लापरवाही के कारण हैं। विश्व में ज्ञात 350 से अधिक कछुआ प्रजातियों में से लगभग 60 फीसदी प्रजातियाँ संकटग्रस्त या विलोप के कगार पर हैं। समुद्री कछुए-जैसे मादा ऑलिव रिडले, जो हजारों किलोमीटर तैरकर अंडे देने के लिए ओडिशा तट पर आती है, को जल और प्रकाश प्रदूषण तथा मानवीय हस्तक्षेप से भारी खतरा है। इन मूक प्राणियों के लिए संकट के प्रमुख कारणों में प्लास्टिक प्रदूषण, समुद्री तटों का अतिक्रमण, अवैध व्यापार और जलवायु परिवर्तन है।

कछुआ हमें सिखाता है कि दौड़ना ज़रूरी नहीं, टिके रहना ज़्यादा ज़रूरी है। यह भी कि मौन शक्ति की एक अलग भाषा है, जो शब्दों से नहीं, बल्कि कर्म से बोलती है। उनकी धीमी चाल में हमें भविष्य की गूँज सुनाई देती है कि यदि हम उन्हें बचा पाए तो खुद को बचा पाएँगे।

[10 अंक]

1(i). गद्यांश के आधार पर कछुए की महत्ता का मुख्य आधार है :

[1 अंक]

- (A) निःशब्द मंद गति
- (B) उसका शांत स्वभाव
- (C) जैव-विविधता का अंग
- (D) संस्कृति, चेतना और पर्यावरण की आत्मा

सही उत्तर: (D) संस्कृति, चेतना और पर्यावरण की आत्मा

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में मुख्य कथ्य और गौण विशेषताओं का अंतर पहचानना आवश्यक है।
- कछुए का महत्त्व जैव-विविधता से आगे संस्कृति, चेतना और पर्यावरण से जुड़ा है।

चरण 1: निर्णायक कथन पहचानिए लेखक स्पष्ट करता है कि कछुए का महत्त्व केवल जैव-विविधता तक सीमित नहीं है; वह हमारी संस्कृति, चेतना और पर्यावरण की आत्मा बन जाता है। अतः प्रश्न में पूछा गया मुख्य आधार उसके व्यापक महत्त्व से संबंधित है।

चरण 2: अन्य विकल्पों को परखिए विकल्प (A) की निःशब्द मंद गति और (B) का शांत स्वभाव कछुए की विशेषताएँ हैं, मुख्य महत्ता का पूरा आधार नहीं। विकल्प (C) जैव-विविधता का अंग होना बताता है, जबकि गद्यांश इस सीमा से आगे जाता है। विकल्प (D) ही लेखक का समग्र आशय व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष कछुए की महत्ता का मुख्य आधार संस्कृति, चेतना और पर्यावरण की आत्मा होना है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: मुख्य आधार पूछे जाने पर गद्यांश के व्यापक निष्कर्ष को चुनें, केवल किसी एक स्वभावगत विशेषता को नहीं।

1(ii). जैव-विविधता से अभिप्राय है :

[1 अंक]

- (A) सभी प्रकार के जीवन की विविधता
- (B) पेड़-पौधों की विभिन्न प्रजातियाँ
- (C) सूक्ष्म जीवों की विभिन्न प्रजातियाँ
- (D) पशु-पक्षियों के जीवन की विविधता

सही उत्तर: (A) सभी प्रकार के जीवन की विविधता

हल:

अवधारणा:

- शब्दार्थ निर्धारित करते समय उसके पूरे अर्थ-क्षेत्र को ध्यान में रखें।
- जैव-विविधता में विभिन्न प्रकार के जीवों और जीवन-रूपों की विविधता सम्मिलित होती है।

चरण 1: शब्द का व्यापक आशय समझिए जैव-विविधता का अभिप्राय सभी प्रकार के जीवन की विविधता से है। गद्यांश कछुओं की प्रजातियों के संकट को जैव-विविधता से जोड़ता है, अर्थात् वे जीवन की व्यापक विविधता के एक अंग हैं।

चरण 2: विकल्पों का अंतर स्पष्ट कीजिए विकल्प (A) सभी जीवन-रूपों को समेटता है। विकल्प (B) केवल पेड़-पौधों, (C) केवल सूक्ष्म जीवों और (D) केवल पशु-पक्षियों तक अर्थ को सीमित करता है। ये तीनों जीवन की विविधता के अंग तो हैं, लेकिन अकेले संपूर्ण जैव-विविधता का अर्थ नहीं बताते।

चरण 3: निष्कर्ष जैव-विविधता का अभिप्राय सभी प्रकार के जीवन की विविधता है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: जिस विकल्प में सभी जीवन-रूप सम्मिलित हों, उसे चुनें; किसी एक जीव-समूह तक सीमित अर्थ अधूरा है।

1(iii). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : समय की रेत पर अपने धैर्य और दीर्घायु के चिह्न छोड़ने वाले कछुओं का जीवन आज संकट में है।

कारण : उन्होंने हिमयुगों, महाविनाशों और भूगर्भीय परिवर्तनों को झेला है।

[1 अंक]

- (A) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।
- (B) कारण सही है, किंतु कथन गलत है।
- (C) कथन सही है, किंतु कारण, कथन की गलत व्याख्या करता है।
- (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (C) कथन सही है, किंतु कारण, कथन की गलत व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता अलग-अलग जाँचनी चाहिए।
- दोनों बातें सही होने मात्र से कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं बन जाता।

चरण 1: कथन की सत्यता जाँचिए गद्यांश के अनुसार कछुओं का जीवन आज संकट में है। लगभग 60 फीसदी प्रजातियाँ संकटग्रस्त या विलोप के कगार पर बताई गई हैं। इसलिए कथन सही है।

चरण 2: कारण की सत्यता जाँचिए कछुओं ने हिमयुगों, महाविनाशों और भूगर्भीय परिवर्तनों को झेला है। यह बात भी गद्यांश में कही गई है, इसलिए कारण अपने आप में सही है।

चरण 3: व्याख्या के संबंध को परखिए पुराने प्राकृतिक परिवर्तनों को झेलना कछुओं की दीर्घजीविता और स्थिरता का प्रमाण है। वर्तमान संकट का कारण मानवीय लालच, लापरवाही, प्रदूषण और हस्तक्षेप हैं। इसलिए दिया गया कारण वर्तमान संकट की सही व्याख्या नहीं करता। (A) और (B) सत्य कथन को गलत बताते हैं; (D) गलत व्याख्यात्मक संबंध जोड़ता है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन सही है, पर दिया गया कारण उसकी सही व्याख्या नहीं करता। अतः मुद्रित विकल्पों में सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: कथन और कारण सही हों तब भी जाँचें कि कारण वास्तव में उसी वर्तमान परिस्थिति का कारण बताता है या नहीं।

1(iv). 'मौन शक्ति की एक अलग भाषा है' – आशय स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भावार्थ लिखते समय कथन को गद्यांश के प्रसंग से जोड़ें।
- कछुए की मौन शक्ति उसके धैर्य, निरंतरता और स्थायी जीवन-शैली में व्यक्त होती है।

चरण 1: मौन और शक्ति का संबंध समझिए यहाँ मौन का अर्थ निष्क्रियता या दुर्बलता नहीं है। कछुआ शोर किए बिना अपनी धीमी, स्थिर चाल से जीवन का क्रम बनाए रखता है। करोड़ों वर्षों का उसका अस्तित्व और कठिन प्राकृतिक परिवर्तनों को सह पाना उसकी भीतरी शक्ति का परिचय देते हैं।

चरण 2: कर्म की भाषा स्पष्ट कीजिए लेखक का आशय है कि शक्ति का परिचय केवल शब्दों या प्रदर्शन से नहीं मिलता। धैर्य, सहनशीलता और निरंतर कर्म भी बिना बोले बहुत कुछ सिखाते हैं। कछुए की जीवन-शैली मनुष्य को शांत रहकर दृढ़ता से आगे बढ़ने का संदेश देती है। इस प्रकार उसका आचरण ही उसकी शक्ति की भाषा है।

चरण 3: निष्कर्ष मौन शक्ति की अलग भाषा का आशय है कि धैर्य, सहनशीलता और निरंतर कर्म बिना शब्दों के भी अपनी सामर्थ्य सिद्ध करते हैं। कछुए का शांत किंतु स्थायी जीवन इसी शक्ति का उदाहरण है।

त्वरित सुझाव: भावार्थ में मौन को कमजोरी न लिखें; कछुए के धैर्य और कर्म से प्रकट होने वाली दृढ़ता को स्पष्ट करें।

1(v). “दौड़ना ज़रूरी नहीं, टिके रहना ज़्यादा ज़रूरी है” – से क्या अभिप्राय है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथन का आशय गति और स्थायित्व के अंतर से स्पष्ट होता है।
- गद्यांश में कछुए की दीर्घायु उसके धीमे किंतु स्थिर जीवन का प्रमाण है।

चरण 1: दौड़ने और टिके रहने का अर्थ खोलिए यहाँ दौड़ना केवल तेज गति से आगे बढ़ने या जल्दबाजी में उपलब्धि पाने का संकेत है। टिके रहने का अर्थ कठिनाइयों के बीच धैर्य, निरंतरता और दृढ़ता बनाए रखना है। लेखक तात्कालिक तेजी की अपेक्षा लंबे समय तक अपने अस्तित्व और प्रयास को बनाए रखने पर बल देता है।

चरण 2: कछुए के जीवन से आशय जोड़िए कछुए की चाल धीमी है, फिर भी उसने हिमयुगों, महाविनाशों और भूगर्भीय परिवर्तनों को झेलकर अपना अस्तित्व बनाए रखा है। इसलिए धीमापन अपने आप में असफलता नहीं है। स्थिर और सतत जीवन-शैली कठिन परिस्थितियों में भी टिके रहने का आधार बनती है। यही उदाहरण मनुष्य को धैर्यपूर्ण कर्म की प्रेरणा देता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस कथन का अभिप्राय है कि जीवन में केवल तेजी या जल्दबाजी महत्वपूर्ण नहीं; धैर्य और निरंतर प्रयास से कठिनाइयों के बीच टिके रहना अधिक आवश्यक है। कछुए का दीर्घकालीन अस्तित्व इसका प्रमाण है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में तेज चाल और स्थायी प्रयास का अंतर बताकर उसे कछुए की दीर्घायु से जोड़ें।

1(vi). कछुओं के संरक्षण हेतु किन्हीं दो उपायों का उल्लेख कीजिए।

[1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संरक्षण के उपाय गद्यांश में बताए गए खतरों के प्रतिकार से निकालें।
- प्रदूषण और समुद्री तटों का अतिक्रमण कछुओं के जीवन को संकट में डालते हैं।

चरण 1: प्रदूषण को रोकिए पहला उपाय है समुद्र और तटों पर प्लास्टिक तथा अन्य कचरा डालने से रोकना और जल-प्रदूषण कम करना। इससे गद्यांश में उल्लिखित प्रदूषणजनित खतरे घटाए जा सकते हैं।

चरण 2: आवास और प्रजनन-स्थल बचाइए दूसरा उपाय है समुद्री तटों को अतिक्रमण और अनावश्यक मानवीय हस्तक्षेप से बचाना। विशेषकर अंडे देने के लिए आने वाली मादा कछुओं के तटीय क्षेत्रों का संरक्षण उनके जीवन-चक्र की रक्षा करेगा।

चरण 3: निष्कर्ष दो उपाय हैं: (1) प्लास्टिक और जल-प्रदूषण पर रोक लगाना; (2) समुद्री तटों को अतिक्रमण तथा मानवीय हस्तक्षेप से सुरक्षित रखना।

त्वरित सुझाव: पहले गद्यांश के दो खतरे चुनें, फिर प्रत्येक को रोकने का ठोस उपाय लिखें।

1(vii). प्रवासी कछुए भारत में क्यों आते हैं ? इन्हें किससे खतरा है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के दोनों पक्षों—आगमन का उद्देश्य और खतरों—का उत्तर देना आवश्यक है।
- गद्यांश में मादा ऑलिव रिडले के ओडिशा तट पर आने का उदाहरण दिया गया है।

चरण 1: भारत आने का उद्देश्य बताइए प्रवासी कछुए अंडे देने के लिए भारत आते हैं। गद्यांश के अनुसार मादा ऑलिव रिडले हजारों किलोमीटर तैरकर ओडिशा के तट तक पहुँचती है। इसलिए उनके आगमन को पर्यटन या भोजन की खोज जैसे गद्यांश से बाहर के कारणों से नहीं जोड़ना चाहिए।

चरण 2: उल्लिखित खतरों को स्पष्ट कीजिए इन कछुओं को जल और प्रकाश प्रदूषण तथा मानवीय हस्तक्षेप से भारी खतरा है। गद्यांश व्यापक संकटों में प्लास्टिक प्रदूषण, समुद्री तटों का अतिक्रमण, अवैध व्यापार और जलवायु परिवर्तन का भी उल्लेख करता है। ये मानवीय लालच और लापरवाही से जुड़े संकट हैं, जबकि कछुए पहले अनेक प्राकृतिक परिवर्तनों को झेल चुके हैं।

चरण 3: निष्कर्ष प्रवासी मादा ऑलिव रिडले कछुए अंडे देने के लिए भारत के ओडिशा तट पर आते हैं। उन्हें जल और प्रकाश प्रदूषण तथा मानवीय हस्तक्षेप से खतरा है; प्लास्टिक, तटीय अतिक्रमण, अवैध व्यापार और जलवायु परिवर्तन भी उनके संकट बढ़ाते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर के पहले वाक्य में अंडे देने का उद्देश्य और अगले वाक्य में गद्यांश में बताए खतरे लिखें।

2. फूल से बोली कली क्यों व्यस्त मुरझाने में है
 फ्रायदा क्या गंध औ मकरंद बिखराने में है
 तूने अपनी उम्र क्यों वातावरण में घोल दी
 अपनी मनमोहक पँखुरियों की छटा क्यों खोल दी
 तू स्वयं को बाँटता है जिस घड़ी से तू खिला
 किन्तु इस उपकार के बदले में तुझको क्या मिला
 मुझको देखो मेरी सब खुशबू मुझ ही में बंद है
 मेरी सुंदरता है अक्षय अनछुआ मकरंद है
 मैं पली काँटों में जब थी दुनिया तब सोती रहीं
 मेरी ही क्या ये कभी किसी की भी कभी होती नहीं
 ऐसी दुनिया के लिए सौरभ लुटाऊँ किसलिए
 स्वार्थी समुदाय का मेला लगाऊँ किसलिए
 फूल उस नादान की वाचालता पर चुप रहा
 फिर स्वयं को देखकर भोली कली से ये कहा
 ज़िंदगी सिद्धांत की सीमाओं में बाँटती नहीं
 ये वो पूँजी है जो व्यय से बढ़ती है घटती नहीं

[8 अंक]

2(i). फूल और कली के संवाद के माध्यम से कवि ने स्पष्ट किया है :

[1 अंक]

- (A) जीवन की सार्थकता को
- (B) जीवन की क्षणभंगुरता को
- (C) जीवन की नश्वरता को
- (D) जीवन के दृष्टिकोण को

सही उत्तर: (A) जीवन की सार्थकता को

हल:

अवधारणा:

- केंद्रीय भाव पहचानने के लिए संवाद के अंत में दिए गए संदेश को पूरे प्रसंग से जोड़ना चाहिए।
- कली निजी लाभ देखती है, जबकि फूल दूसरों के लिए जीने का महत्त्व बताता है।

चरण 1: अंतिम कथन का आशय फूल कहता है कि ज़िंदगी ऐसी पूँजी है जो खर्च करने से बढ़ती है। यहाँ खर्च करने का अर्थ अपने गुण, सौंदर्य और सुगंध से दूसरों को लाभ पहुँचाना है। इस प्रकार परोपकार से जीवन सार्थक होता है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना (B) क्षणभंगुरता और (C) नश्वरता जीवन की अल्प अवधि या अंत को प्रधान बनाते हैं; ये कविता का अंतिम संदेश नहीं हैं। (D) में दृष्टिकोणों का सामान्य उल्लेख है, पर संवाद का विशिष्ट निष्कर्ष दूसरों के लिए जीने में जीवन की सार्थकता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने जीवन की सार्थकता स्पष्ट की है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: केंद्रीय भाव के प्रश्न में अंतिम पंक्तियों के संदेश को पूरे संवाद के साथ जोड़कर सबसे सटीक विकल्प चुनें।

2(ii). काव्यांश के अनुसार कौन-सी पूँजी बाँटने से बढ़ती है ?

[1 अंक]

- (A) ज्ञान
- (B) ज़िंदगी
- (C) संपदा
- (D) दुख

सही उत्तर: (B) ज़िंदगी

हल:

अवधारणा:

- उत्तर काव्यांश के स्पष्ट कथन पर आधारित होना चाहिए, सामान्य मान्यता पर नहीं।
- पूँजी का रूपक जीवन की उपयोगिता और परोपकारी विस्तार को समझाता है।

चरण 1: पूँजी के संकेत को पहचानना पिछली पंक्ति में ज़िंदगी का उल्लेख है और अगली पंक्ति में उसी के लिए 'ये वो पूँजी' कहा गया है। इसलिए बाँटने से बढ़ने वाली पूँजी ज़िंदगी है; बाँटना उसे दूसरों के लिए उपयोगी बनाता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण ज्ञान बाँटने से बढ़ता है, यह सामान्य बात है, लेकिन इस काव्यांश में पूँजी का संकेत ज्ञान की ओर नहीं है। संपदा और दुख भी यहाँ उस रूपक के विषय नहीं हैं। अतः (A), (C) और (D) प्रसंग के अनुरूप नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश के अनुसार बाँटने से बढ़ने वाली पूँजी ज़िंदगी है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: 'ये' जैसे संकेतवाचक शब्द के ठीक पहले आए विषय को देखें; यहाँ वह ज़िंदगी है, ज्ञान नहीं।

2(iii). काव्यांश के संदर्भ में 'वाचालता' शब्द का अर्थ है :

[1 अंक]

- (A) चालाकी
- (B) समझदारी
- (C) बड़बोलापन
- (D) मूर्खता

सही उत्तर: (C) बड़बोलापन

हल:

अवधारणा:

- शब्द का अर्थ उसके आसपास के व्यवहार और कथन से स्पष्ट होता है।
- वाचालता अधिक बोलने अथवा बड़बोलापन का भाव व्यक्त करती है।

चरण 1: कली के व्यवहार को देखना कली लगातार फूल से प्रश्न करती है और अपने सौंदर्य तथा सुरक्षित सुगंध की प्रशंसा करती है। फूल उसकी बातें चुपचाप सुनता है। इस विरोध से वाचालता का अर्थ बहुत बोलना और बड़बोलापन स्पष्ट होता है।

चरण 2: विकल्पों में भेद करना चालाकी का संबंध चतुर युक्ति से है, समझदारी विवेक से और मूर्खता बुद्धि के अभाव से। कली को नादान अवश्य कहा गया है, किंतु 'वाचालता' उस नादानी का पर्याय नहीं है; वह उसके अधिक बोलने के व्यवहार का नाम है।

चरण 3: निष्कर्ष 'वाचालता' का अर्थ बड़बोलापन है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: आसपास के विशेषण से भ्रमित न हों; 'नादान' और 'वाचाल' दो अलग गुण बताते हैं।

2(iv). कली और फूल के व्यक्तित्व में क्या अंतर है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पात्र का स्वभाव उसके कथनों और व्यवहार के प्रमाण से बताया जाता है।
- कली और फूल के अंतर का केंद्र आत्मकेंद्रित संग्रह तथा उदार वितरण है।

चरण 1: कली का व्यक्तित्व कली आत्मकेंद्रित और प्रतिफल की अपेक्षा रखने वाली है। उसे अपनी सुगंध अपने भीतर बंद रखने तथा मकरंद अनछुआ रहने पर गर्व है। वह पूछती है कि उपकार के बदले फूल को क्या मिला। इससे स्पष्ट है कि वह संबंधों को निजी लाभ की कसौटी पर परखती है। दुनिया को स्वार्थी मानने के कारण वह अपना सौंदर्य दूसरों के साथ बाँटना नहीं चाहती।

चरण 2: फूल का व्यक्तित्व फूल उदार, परोपकारी और धैर्यशील है। वह खिलते ही अपनी सुगंध और सुंदरता वातावरण में बाँट देता है तथा बदले में लाभ की अपेक्षा नहीं करता। कली की लंबी बातों पर उसका चुप रहना उसके संयम को दर्शाता है। उसका उत्तर बताता है कि दूसरों के हित में जीने से जीवन का मूल्य बढ़ता है। इस प्रकार कली का दृष्टिकोण संकुचित और फूल का दृष्टिकोण व्यापक तथा जीवनोपयोगी है।

चरण 3: निष्कर्ष कली निजी लाभ के लिए अपने गुण सँजोती है; फूल बिना प्रतिफल की अपेक्षा के उन्हें सबमें बाँटता है। कली आत्मकेंद्रित है, जबकि फूल उदार, संयमी और परोपकारी है।

त्वरित सुझाव: तुलना में दोनों पात्रों का एक ही आधार पर अंतर लिखें और प्रत्येक गुण के साथ कविता का प्रमाण जोड़ें।

2(v). कली अपना सौंदर्य और महक किसी के साथ क्यों नहीं बाँटना चाहती ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी पात्र के निर्णय का कारण उसके अनुभव और संसार के प्रति धारणा से समझना चाहिए।
- कली के कथन में उपेक्षा की अनुभूति, अविश्वास और निजी संपदा बचाने की इच्छा जुड़ी हैं।

चरण 1: दुनिया के प्रति अविश्वास कली कहती है कि जब वह काँटों के बीच पल रही थी, तब दुनिया सो रही थी। उसे लगता है कि उसके कठिन समय में संसार ने उसकी परवाह नहीं की। इसलिए वह मानती है कि यह दुनिया किसी की सगी नहीं होती। यह उसकी अपनी धारणा है, जिसे कविता फूल के उत्तर के सामने रखती है। उपेक्षा की यही अनुभूति उसे दूसरों से दूर करती है।

चरण 2: सुगंध और सौंदर्य बचाने का तर्क कली दुनिया को स्वार्थी लोगों का समुदाय मानती है। उसे विश्वास नहीं है कि अपना सौरभ लुटाने पर उसे कोई लाभ मिलेगा। वह अपनी बंद खुशबू और अनछुए मकरंद को सुरक्षित तथा अक्षय समझती है। इसलिए वह अपने सौंदर्य का आनंद दूसरों को देने के बजाय उसे अपने तक सीमित रखना चाहती है। उसके निर्णय का आधार निजी लाभ और प्रतिदान की अपेक्षा है।

चरण 3: निष्कर्ष कली संसार को स्वार्थी और अपने संघर्ष के प्रति उदासीन मानती है। उपकार का प्रतिफल न मिलने की आशंका और अपना सौंदर्य सुरक्षित रखने की इच्छा के कारण वह अपनी महक किसी से बाँटना नहीं चाहती।

त्वरित सुझाव: 'क्यों' के उत्तर में केवल स्वार्थी कहना पर्याप्त नहीं; काँटों में पलने और संसार की उपेक्षा का संदर्भ भी दें।

2(vi). कली अथवा फूल, आप किसके विचारों से सहमत हैं ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

[1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सहमति का आधार काव्यांश का संदेश और उसके समर्थन में स्पष्ट तर्क होना चाहिए।
- फूल जीवन का मूल्य दूसरों के हित में अपने गुणों के उपयोग से जोड़ता है।

चरण 1: विचार का चयन मैं फूल के विचारों से सहमत हूँ। उसका सुगंध और सौंदर्य बाँटना यह सिखाता है कि अपने गुणों से दूसरों को सुख देने पर जीवन उपयोगी और सार्थक बनता है। केवल उन्हें अपने भीतर बंद रखने से समाज को उनका लाभ नहीं मिलता।

चरण 2: काव्यांश से तर्क फूल का कथन है कि जीवन की पूँजी व्यय से बढ़ती है। इसका आशय है कि परोपकार से जीवन का मूल्य और प्रभाव बढ़ता है। उपकार को तत्काल प्रतिफल से तौलने वाली कली का दृष्टिकोण हमें संकुचित करता है, जबकि फूल उदारता की प्रेरणा देता है।

चरण 3: निष्कर्ष मैं फूल से सहमत हूँ, क्योंकि बिना प्रतिफल की अपेक्षा के अपने गुण दूसरों के हित में लगाना जीवन को सार्थक बनाता है।

त्वरित सुझाव: अपनी सहमति स्पष्ट लिखकर कविता के संदेश से एक सीधा तर्क दें; केवल पात्र का नाम न लिखें।

3(i). निम्नलिखित दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

तारों भरी रात का सौंदर्य

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में दिए हुए विषय को कल्पना, अनुभूति और मौलिक अभिव्यक्ति से सजीव बनाया जाता है। तारों भरी रात के वर्णन में आकाश के दृश्य के साथ मन में उठने वाले भाव भी महत्वपूर्ण हैं।
- लगभग 120 शब्दों की सीमा में एक केंद्रीय अनुभव चुनना चाहिए। सरल, चित्रात्मक भाषा, क्रमबद्ध वर्णन और अर्थपूर्ण अंत लेख को प्रभावी बनाते हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना सबसे पहले विषयानुकूल शीर्षक दें। आरंभ में रात और आकाश का दृश्य स्थापित करें। फिर तारों की चमक, चाँदनी, हवा और आसपास की शांति को अपने अनुभव से जोड़ें। अंत में इस दृश्य से मिलने वाले सुकून अथवा प्रकृति से आत्मीयता का भाव रखें। वर्णन को छत पर लेटे कथावाचक की दृष्टि से आगे बढ़ाने पर घटनाओं में एकता बनी रहती है। उपमा का सीमित प्रयोग करें और अनावश्यक तथ्य न जोड़ें। यह रचनात्मक लेख है, इसलिए इसमें पत्र का पता, संबोधन या समाचार का तिथि-विवरण नहीं चाहिए।

चरण 2: पूर्ण नमूना लेख तारों भरी रात का सौंदर्य

गर्मियों की एक रात मैं छत पर लेटा था। ऊपर नीले आकाश में अनगिनत तारे झिलमिला रहे थे। लगता था, किसी ने काले मखमल पर चाँदी के मोती बिखेर दिए हों। ठंडी हवा दिनभर की थकान मिटा रही थी। दूर कहीं झींगुरों की आवाज़ सन्नाटे में संगीत घोल रही थी। चाँद की हल्की रोशनी में पेड़ों की परछाइयाँ रहस्यमय लग रही थीं। मैंने एक टूटता तारा देखा और अनायास मन में एक इच्छा माँग ली। उस विशाल आकाश के सामने अपनी चिंताएँ बहुत छोटी जान पड़ीं। शहर के शोर और चमक से दूर यह रात प्रकृति का खुला आमंत्रण थी। देर तक तारों को निहारते हुए लगा कि सच्चा सौंदर्य किसी प्रदर्शन में नहीं, ऐसे शांत क्षणों में छिपा है।

चरण 3: निष्कर्ष यह नमूना लेख तारों भरी रात के दृश्य, ध्वनि और शांति को व्यक्तिगत अनुभूति से जोड़ता है तथा प्रकृति के सौंदर्य की अनुभूति के साथ पूर्ण होता है।

त्वरित सुझाव: तारों की सूची देने के बजाय एक रात का अनुभव चुनें; दृश्य के साथ हवा, ध्वनि और अपने मन का भाव जोड़कर वर्णन सजीव बनाएँ।

3(ii). निम्नलिखित दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

पुस्तक मेले में पुस्तक का लोकार्पण

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में किसी घटना का केवल विवरण देने के बजाय उसके वातावरण, पात्रों और लेखक की अनुभूतियों को उभारा जाता है। पुस्तक मेले में लोकार्पण का विषय पुस्तक और पाठक के संबंध को अभिव्यक्त करने का अवसर देता है।
- शीर्षक के बाद आरंभ, घटना का विकास और सार्थक समापन रखें। लगभग 120 शब्दों में किसी एक लोकार्पण के दृश्य पर केंद्रित रहकर लेख को सुसंबद्ध और मौलिक बनाया जा सकता है।

चरण 1: प्रारूप और सामग्री की योजना शीर्षक में पुस्तक मेले और लोकार्पण का संकेत दें। आरंभ में मेले की चहल-पहल तथा मंच का वातावरण रखें। मध्य में पुस्तक का अनावरण, लेखक की भावना और पाठकों की प्रतिक्रिया आए। अंतिम वाक्यों में पुस्तक पढ़ने की उत्सुकता या साहित्य के महत्त्व का बोध व्यक्त करें। काल्पनिक प्रसंग को अनुभूति के साथ लिखें; उसे किसी वास्तविक आयोजन की प्रमाणित खबर की तरह प्रस्तुत करना आवश्यक नहीं है। अनावश्यक औपचारिक विवरणों की जगह चुने हुए दृश्य लेख को जीवंत बनाते हैं।

चरण 2: पूर्ण नमूना लेख पुस्तक मेले में एक नई शुरुआत

पुस्तक मेले की चहल-पहल के बीच एक छोटे से मंच पर पाठकों की भीड़ जुटी थी। आज एक युवा लेखिका की पहली पुस्तक का लोकार्पण होना था। मेज़ पर फूलों के साथ रंगीन कागज़ में लिपटी पुस्तक रखी थी। जैसे ही आवरण हटा, तालियों से पूरा परिसर गूँज उठा। लेखिका की आँखों में खुशी और संकोच साथ झलक रहे थे। उन्होंने बताया कि यह पुस्तक उनके गाँव की स्मृतियों से जन्मी है। पास खड़ा एक बच्चा उत्सुकता से पुस्तक के चित्र देख रहा था। पाठकों के प्रश्नों ने बातचीत को और आत्मीय बना दिया। मैंने भी एक प्रति खरीदी और लेखिका से हस्ताक्षर लिए। लौटते समय लगा कि लोकार्पण केवल पुस्तक का अनावरण नहीं, लेखक और पाठक के बीच नए संवाद की शुरुआत है।

चरण 3: निष्कर्ष नमूना लेख लोकार्पण की घटना को मेले की चहल-पहल, लेखिका की भावनाओं और पाठकों की उत्सुकता से जोड़कर एक आत्मीय साहित्यिक अनुभव के रूप में प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: लोकार्पण लिखते समय आवरण खुलने का एक दृश्य चुनें और उसके साथ लेखक तथा पाठकों की प्रतिक्रिया जोड़ें; केवल अतिथियों की सूची न दें।

3(iii). निम्नलिखित दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत का बढ़ता वर्चस्व

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय का स्पष्ट परिचय, विचारों का स्वाभाविक विस्तार और सार्थक समापन होना चाहिए।
- भारत के अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव को विज्ञान, अर्थव्यवस्था, संस्कृति और कूटनीति के ठोस उदाहरणों से स्पष्ट करना उपयुक्त है।

चरण 1: रूपरेखा और भाषा का चयन पहले भारत की बदलती वैश्विक भूमिका का परिचय दें। फिर अंतरिक्ष विज्ञान, योग, आर्थिक संभावनाओं और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के उदाहरण जोड़ें। अंत में इस प्रतिष्ठा को शांति तथा मानवकल्याण की जिम्मेदारी से जोड़ें। लेख की भाषा प्रभावी किंतु संयत हो; किसी अन्य देश को नीचा दिखाने या अप्रमाणित आँकड़े देने से बचें। शीर्षक के बाद लगभग 120 शब्दों में विचारों को एक सूत्र में बाँधें। उदाहरणों को अलग-अलग गिनाने के स्थान पर उन्हें भारत की बदलती पहचान से जोड़ें। आरंभ में अतीत और वर्तमान का संकेत तथा समापन में भविष्य की दिशा देने से लेख में पूर्णता आती है।

चरण 2: पूर्ण आदर्श लेख अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत का बढ़ता वर्चस्व

कभी दुनिया भारत को केवल प्राचीन सभ्यता के देश के रूप में देखती थी; आज वह उसकी वैज्ञानिक और आर्थिक शक्ति भी पहचानती

है। चंद्रयान की सफलता ने भारतीय प्रतिभा का परिचय दिया है। योग ने सीमाएँ पार करके विश्व को स्वस्थ जीवन का संदेश पहुँचाया है। विशाल बाजार, युवा शक्ति और डिजिटल तकनीक भारत की संभावनाएँ बढ़ा रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय बैठकों में भारत विकासशील देशों की चिंताओं को स्वर देता है। संकट के समय सहायता और संवाद की पहल उसकी विश्वसनीयता मजबूत करती है। यह बढ़ती प्रतिष्ठा केवल गर्व का विषय नहीं, जिम्मेदारी भी है। यदि भारत शांति, पर्यावरण संरक्षण और समान अवसरों के लिए काम करता रहे, तो उसका प्रभाव मानवकल्याण की दिशा में सार्थक योगदान बनेगा।

चरण 3: निष्कर्ष भारत का बढ़ता अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव विज्ञान, संस्कृति और सहयोग पर आधारित है; उसकी सार्थकता विश्वशांति और मानवकल्याण में है।

त्वरित सुझाव: विषय को केवल प्रशंसा तक सीमित न रखें; दो ठोस उदाहरण देकर अंतिम वाक्य में वैश्विक जिम्मेदारी जोड़ें।

4(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

सीधा पिरामिड और उल्टा पिरामिड शैली में क्या अंतर है ? स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पिरामिड शैली का अंतर सूचनाओं और घटनाओं के क्रम से तय होता है।
- उल्टा पिरामिड समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को आरंभ में रखता है; सीधा पिरामिड घटनाक्रम के साथ चरम बिंदु तक पहुँचता है।

चरण 1: क्रम का आधार समझें सीधे पिरामिड में प्रस्तुति आरंभिक परिस्थितियों से आगे बढ़ती है और प्रमुख घटना या निष्कर्ष अंत में आता है। उल्टे पिरामिड में समाचार का मुख्य तथ्य पहले तथा सहायक विवरण बाद में आते हैं। इसलिए अंतर केवल अनुच्छेदों की लंबाई का नहीं, सूचना की प्राथमिकता और प्रस्तुति के क्रम का है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर सीधे पिरामिड में घटनाएँ आरंभ से क्रमशः आगे बढ़ती हैं और मुख्य बात अंत में आती है। उल्टे पिरामिड में सर्वाधिक महत्वपूर्ण सूचना पहले, फिर घटते महत्व के क्रम में विवरण आते हैं। समाचार लेखन में उल्टा पिरामिड प्रचलित है।

चरण 3: निष्कर्ष सीधा पिरामिड मुख्य बात तक क्रमशः पहुँचता है, जबकि उल्टा पिरामिड मुख्य बात से आरंभ होता है।

त्वरित सुझाव: तुलना करते समय केवल आरंभ और अंत की स्थिति बताएँ: सीधा क्रम घटना से निष्कर्ष, उल्टा क्रम मुख्य तथ्य से विवरण।

4(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

पत्रकारिता के क्षेत्र में 'डेस्क' से क्या अभिप्राय है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता में डेस्क का अर्थ समाचार संस्थान का संपादकीय कार्य संभालने वाला विभाग है।
- संवाददाता समाचार जुटाते हैं, जबकि डेस्क प्राप्त सामग्री का चयन, जाँच और संपादन करके उसे प्रस्तुति योग्य बनाता है।

चरण 1: डेस्क की भूमिका स्पष्ट करें यहाँ डेस्क से आशय केवल काम करने की मेज नहीं है। यह संपादकीय व्यवस्था का वह विभाग है जहाँ विभिन्न स्रोतों से आई सूचनाओं को परखा और व्यवस्थित किया जाता है। भाषा सुधारना, अनावश्यक अंश हटाना तथा उचित शीर्षक देना इसकी प्रमुख जिम्मेदारियाँ हैं।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर पत्रकारिता में डेस्क समाचार संस्थान के उस संपादकीय विभाग को कहते हैं जहाँ संवाददाताओं तथा अन्य स्रोतों से प्राप्त समाचारों का चयन, तथ्य-जाँच, संपादन और शीर्षक निर्धारण होता है। यह सामग्री को प्रकाशन या प्रसारण योग्य रूप में तैयार करता है।

चरण 3: निष्कर्ष डेस्क समाचारों की संपादकीय जाँच और परिष्कार का केंद्र है, जो प्राप्त सामग्री को पाठक या दर्शक के लिए तैयार करता है।

त्वरित सुझाव: डेस्क की परिभाषा में संपादकीय विभाग लिखकर उसके तीन काम अवश्य जोड़ें: चयन, संपादन और शीर्षक निर्धारण।

4(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय सबसे बड़ी समस्या क्या होती है और इसे कैसे हल किया जा सकता है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी का कथावाचक घटनाओं और पात्रों के मनोभावों का वर्णन कर सकता है; नाटक में इन्हें मंच पर दृश्य और श्रव्य रूप देना पड़ता है।
- रूपांतरण में मूल कथ्य बचाते हुए वर्णन को अभिनय योग्य दृश्यों, संवादों तथा मंचीय संकेतों में बदलना आवश्यक है।

चरण 1: मुख्य समस्या पहचानें कहानी का वर्णनात्मक विस्तार सीधे मंच पर प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। विशेष कठिनाई पात्रों के मन में चलने वाले विचारों और भावों को दर्शकों के सामने व्यक्त करने की होती है। इसलिए केवल कहानी के वाक्यों को संवाद बना देना पर्याप्त नहीं है।

चरण 2: समस्या का समाधान करें घटनाओं को मंच के अनुकूल दृश्यों में बाँटें और पात्रों के व्यवहार, संवाद तथा हावभाव से भाव स्पष्ट करें। जहाँ आवश्यक हो, स्वगत कथन का संयमित प्रयोग करें। इससे कथा की आत्मा बनी रहती है और प्रस्तुति नाटकीय बनती है।

चरण 3: निष्कर्ष सबसे बड़ी समस्या कहानी के वर्णन और पात्रों के आंतरिक भावों को मंच पर साकार करना है। इसे कथ्य के अनुरूप दृश्य, संवाद, अभिनय, हावभाव तथा आवश्यक स्वगत कथन में बदलकर हल किया जा सकता है, जिससे मूल संवेदना बनी रहे।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले वर्णन को मंच पर बदलने की कठिनाई लिखें, फिर संवाद और अभिनय से उसका समाधान बताएँ।

4(iv). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

रेडियो नाटक के लिए कहानी का चुनाव करते समय क्या सावधानी बरतनी चाहिए और क्यों ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; श्रोता पात्रों और घटनाओं को देख नहीं सकता, केवल आवाज के सहारे उनकी कल्पना करता है।
- उपयुक्त कहानी में घटनाएँ, पात्रों की पहचान और परिवेश संवाद, ध्वनि प्रभाव तथा संगीत से स्पष्ट हो सकें।

चरण 1: माध्यम की सीमा समझें रेडियो नाटक में रंग, वेशभूषा, चेहरे के भाव या मौन दृश्य सीधे दिखाई नहीं देते। यदि कहानी का प्रभाव पूरी तरह इन्हीं दृश्य संकेतों पर टिका हो तो श्रोता कथानक समझने में कठिनाई अनुभव करेगा। इसलिए कहानी का चुनाव श्रव्य प्रस्तुति की संभावना देखकर करें।

चरण 2: उपयुक्त कहानी की विशेषता बताएँ ऐसी कहानी चुनें जिसमें बहुत अधिक पात्र न हों और जिसके घटनाक्रम को संवाद तथा ध्वनियों से व्यक्त किया जा सके। उदाहरण के लिए पदचाप या दरवाजे की आवाज किसी के आने का संकेत दे सकती है। अलग आवाजों और स्पष्ट संवादों से पात्रों की पहचान बनी रहती है।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो नाटक के लिए ऐसी कहानी चुननी चाहिए जिसमें सीमित पात्र हों तथा घटनाएँ और परिवेश संवादों, ध्वनि प्रभावों व संगीत से स्पष्ट हो सकें। केवल दृश्य संकेतों पर निर्भर कहानी से बचना चाहिए, क्योंकि रेडियो पूर्णतः श्रव्य माध्यम है।

त्वरित सुझाव: कहानी चुनने की प्रत्येक सावधानी को रेडियो की श्रव्य प्रकृति से जोड़ें; केवल रोचक कहानी कहना पर्याप्त नहीं है।

4(v). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

लेखन क्षमता का विकास करने के लिए हमें क्या करना चाहिए ? कारण सहित उत्तर लिखिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखन क्षमता नियमित अभ्यास, सजग अवलोकन और अच्छे साहित्य के अध्ययन से क्रमशः विकसित होती है।
- लिखे हुए का पुनर्पाठ और संशोधन विचारों को स्पष्ट करने, भाषा सँवारने तथा अनावश्यक दोहराव हटाने में सहायक हैं।

चरण 1: विकास के उपाय बताएँ प्रतिदिन कुछ लिखने की आदत डालें, आसपास की घटनाओं और लोगों को ध्यान से देखें तथा अच्छे लेखकों की रचनाएँ पढ़ें। अपने अनुभवों और विचारों को क्रमबद्ध रूप में लिखें। केवल नियम याद करने के स्थान पर भाषा का लगातार प्रयोग करना आवश्यक है।

चरण 2: उपायों के कारण स्पष्ट करें पढ़ने से शब्द भंडार और अभिव्यक्ति के विविध ढंग मिलते हैं; अवलोकन से विषय तथा अनुभव प्राप्त होते हैं। नियमित अभ्यास विचारों को व्यक्त करने का संकोच घटाता है। लिखे हुए को दोबारा पढ़कर सुधारने और दूसरों की उपयोगी प्रतिक्रिया लेने से भाषा अधिक सुसंगत बनती है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखन क्षमता बढ़ाने के लिए नियमित लिखना, अच्छे साहित्य का अध्ययन, सूक्ष्म अवलोकन और लिखे हुए का संशोधन करना चाहिए। पढ़ने से शब्द भंडार बढ़ता है, अवलोकन से विषय मिलते हैं और अभ्यास तथा सुधार से अभिव्यक्ति स्पष्ट व प्रभावी बनती है।

त्वरित सुझाव: कारण सहित उत्तर में हर उपाय का लाभ जोड़ें: पठन से शब्द भंडार, अवलोकन से विषय और अभ्यास से अभिव्यक्ति सुधरती है।

5(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

आर्थिक पत्रकारिता के महत्त्व को रेखांकित करते हुए लिखिए कि आर्थिक जगत के पत्रकारों से क्या अपेक्षा रखी जाती है ?

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आर्थिक पत्रकारिता अर्थव्यवस्था, व्यापार, उद्योग, बजट और आर्थिक नीतियों से जुड़े समाचारों का विशिष्ट क्षेत्र है। इसका उद्देश्य आर्थिक घटनाओं का जनजीवन पर पड़ने वाला प्रभाव स्पष्ट करना है।
- विशेषज्ञ पत्रकार से विषय का ज्ञान, आँकड़ों की सही समझ, प्रमाणित स्रोतों का उपयोग तथा जटिल आर्थिक बातों को सरल भाषा में प्रस्तुत करने की क्षमता अपेक्षित है।

चरण 1: महत्त्व और अपेक्षाओं के बिंदु चुनना प्रश्न के दो पक्ष हैं : आर्थिक पत्रकारिता का महत्त्व और पत्रकार की योग्यताएँ। पहले पक्ष में आर्थिक नीतियों तथा आम आदमी के संबंध को स्पष्ट करना चाहिए। दूसरे पक्ष में आर्थिक समझ, तथ्य-जाँच, निष्पक्षता और सरल प्रस्तुति को स्थान देना चाहिए। केवल शेयर-बाज़ार की सूचना देना आर्थिक पत्रकारिता का पूरा उद्देश्य नहीं है; रोज़गार, महँगाई और बजट जैसे विषय भी सीधे जनजीवन से जुड़े हैं।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर आर्थिक पत्रकारिता देश की अर्थव्यवस्था, व्यापार, उद्योग, बजट और आर्थिक नीतियों की जानकारी देती है। वह महँगाई, रोज़गार और बाज़ार में होने वाले बदलावों का आम जनता पर प्रभाव समझाकर जागरूक निर्णय लेने में सहायता करती है। आर्थिक पत्रकारों से अपेक्षा है कि उन्हें अर्थशास्त्र तथा आर्थिक गतिविधियों की अच्छी समझ हो। वे आँकड़ों और सूचनाओं की प्रामाणिकता जाँचें, विशेषज्ञों से संपर्क रखें तथा निष्पक्ष रहकर जटिल आर्थिक विषयों को सरल, स्पष्ट और सामान्य पाठकों के लिए बोधगम्य भाषा में प्रस्तुत करें।

चरण 3: निष्कर्ष आर्थिक पत्रकारिता आर्थिक घटनाओं को जनहित से जोड़ती है; इसके पत्रकारों के लिए विषयज्ञान, विश्वसनीयता, निष्पक्षता और सरल अभिव्यक्ति आवश्यक हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले आर्थिक पत्रकारिता का जनजीवन से संबंध लिखें, फिर पत्रकार की आर्थिक समझ, तथ्य-जाँच और सरल भाषा की अपेक्षाएँ जोड़ें।

5(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

टेलीविज़न पर प्रसारण से पूर्व किसी भी सूचना को समाचार बनने के लिए किन-किन चरणों से गुजरना पड़ता है ? संक्षेप में लिखिए।

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- टेलीविज़न दृश्य-श्रव्य माध्यम है। इसमें किसी सूचना का समाचार रूप उपलब्ध तथ्य, दृश्य, संवाददाता की जानकारी और प्रस्तुति की तैयारी के अनुसार विकसित होता है।
- समाचार प्रस्तुति के प्रमुख चरण हैं : फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़, ड्राई एंकर, फ़ोन-इन, एंकर-विज़ुअल, एंकर-बाइट और लाइव। इनके नाम के साथ उनकी भूमिका भी स्पष्ट करनी चाहिए।

चरण 1: चरणों का क्रम और आशय समझना सबसे पहले घटना की तात्कालिक सूचना आती है। फिर एंकर उपलब्ध जानकारी पढ़ता है और संवाददाता से फ़ोन पर विवरण लिया जाता है। दृश्य मिलने पर उन्हें समाचार के साथ दिखाया जाता है। संबंधित व्यक्ति की प्रतिक्रिया जोड़ने से घटना का पक्ष स्पष्ट होता है। अंततः घटनास्थल से सीधा प्रसारण दर्शकों को तत्काल स्थिति से जोड़ता है। इस क्रम में सूचना अधिक विस्तृत और दृश्य-श्रव्य रूप से समृद्ध होती जाती है।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर टेलीविज़न पर सूचना समाचार बनने के लिए मुख्यतः इन चरणों से गुजरती है। फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़ में तत्काल संक्षिप्त सूचना दी जाती है। ड्राई एंकर में समाचार-वाचक बिना दृश्यों के विवरण पढ़ता है। फ़ोन-इन में संवाददाता फ़ोन पर जानकारी देता है। एंकर-विज़ुअल में एंकर के कथन के साथ संबंधित दृश्य दिखाए जाते हैं। एंकर-बाइट में प्रत्यक्षदर्शी अथवा संबंधित व्यक्ति का कथन सुनाया जाता है। लाइव में घटनास्थल से सीधा प्रसारण होता है। इस प्रकार समाचार क्रमशः विस्तृत और सजीव बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष फ़्लैश से लाइव तक समाचार में विवरण, संवाददाता की जानकारी, दृश्य और संबंधित व्यक्तियों के कथन जुड़ते हैं, जिससे उसकी प्रस्तुति अधिक पूर्ण होती है।

त्वरित सुझाव: छह चरणों का क्रम याद रखें और प्रत्येक नाम के साथ उसकी एक प्रमुख विशेषता लिखें; केवल नामों की सूची देकर उत्तर समाप्त न करें।

5(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

आपके विद्यालय ने ग्रीष्मावकाश के दौरान 'योग कक्षाओं' का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों के साथ उनके अभिभावकों ने भी इन कक्षाओं का लाभ उठाया। अपनी स्कूल पत्रिका के लिए विद्यालय में आयोजित इस कार्यक्रम की एक रिपोर्ट देव/देवांशी की ओर से तैयार कीजिए।

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रिपोर्ट में घटना का तथ्यपरक, क्रमबद्ध और संक्षिप्त विवरण दिया जाता है। शीर्षक, संवाददाता का नाम तथा स्थान और तिथि इसके प्रमुख अंग हैं।
- विद्यालय की पत्रिका के लिए रिपोर्ट में कार्यक्रम का उद्देश्य, गतिविधियाँ, सहभागिता और परिणाम स्पष्ट होने चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना शीर्षक में योग कक्षाओं का संकेत दें और देव अथवा देवांशी का नाम लिखें। स्थान और तिथि के बाद ग्रीष्मावकाश में हुए आयोजन, विद्यार्थियों तथा अभिभावकों की भागीदारी और स्वास्थ्य संबंधी लाभों का उल्लेख करें। भाषा तटस्थ रखें। आयोजन का विवरण भूतकाल में दें और व्यक्तिगत प्रशंसा या अतिशयोक्ति से बचें। प्रश्न में तिथि या विद्यालय का नाम निश्चित नहीं है, इसलिए मॉडल रिपोर्ट में उपयुक्त विवरण लिया गया है।

चरण 2: मॉडल रिपोर्ट ग्रीष्मावकाश में योग कक्षाओं का सफल आयोजन देवांशी, छात्र संवाददाता

नई दिल्ली, 15 जून। हमारे विद्यालय में ग्रीष्मावकाश के दौरान योग कक्षाओं का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों के साथ उनके अभिभावकों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रशिक्षक ने सरल आसनों, प्राणायाम और ध्यान का अभ्यास कराया तथा सही मुद्रा और नियमित अभ्यास का महत्व समझाया। प्रतिभागियों ने स्वस्थ जीवनशैली अपनाने का संकल्प लिया। समापन पर प्रधानाचार्य ने सभी का आभार व्यक्त किया। इन कक्षाओं ने विद्यालय और परिवारों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनाने में उपयोगी भूमिका निभाई।

चरण 3: निष्कर्ष रिपोर्ट में योग कक्षाओं के आयोजन, गतिविधियों, विद्यार्थियों और अभिभावकों की सहभागिता तथा स्वास्थ्य-जागरूकता के परिणाम का तथ्यपरक विवरण दिया गया है।

त्वरित सुझाव: रिपोर्ट लिखते समय शीर्षक, संवाददाता, स्थान-तिथि और आयोजन के परिणाम की जाँच अवश्य करें।

6. सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना

मैं पेंच को खोलने के बजाए

उसे बेतरह कसता चला जा रहा था

क्यों कि इस करतब पर मुझे

साफ़ सुनाई दे रही थी

तमाशबीनों की शाबाशी और वाह वाह !

आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था

ज़ोर ज़बरदस्ती से

बात की चूड़ी मर गई

और वह भाषा में बेकार घूमने लगी !

हार कर मैंने उसे कील की तरह

उसी जगह ठोक दिया।

[5 अंक]

6(i). 'बात की चूड़ी मरना' से क्या अभिप्राय है ?

[1 अंक]

(A) बात का पकड़ में न आना

(B) बात का प्रभावहीन हो जाना

(C) कथ्य और माध्यम का तालमेल होना

(D) बात में कसाव और ताकत का होना

सही उत्तर: (B) बात का प्रभावहीन हो जाना

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में पेंच और उसकी चूड़ी भाषा तथा कथ्य के संबंध को स्पष्ट करने वाले प्रतीक हैं।
- भावार्थ चुनते समय प्रतीक को अगली पंक्ति के अर्थ से जोड़कर समझना चाहिए।

चरण 1: प्रतीक का आशय पहचानना पेंच की चूड़ी घिस जाने पर वह कस नहीं पाता और व्यर्थ घूमता है। इसी तरह अत्यधिक शब्दाडंबर तथा ज़ोर-ज़बरदस्ती के कारण बात अपनी सार्थकता और प्रभाव खो देती है। अगली पंक्ति में उसका भाषा में बेकार घूमना इसी निष्प्रभावी अवस्था की पुष्टि करता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (B) प्रभावहीन होने का सही अर्थ देता है। (A) बात समझ में न आने की स्थिति बताता है, जबकि यहाँ उसका असर समाप्त होने पर बल है। (C) कथ्य और माध्यम के सामंजस्य तथा (D) कसाव और ताकत को बताते हैं; दोनों कविता में वर्णित बिगड़ी स्थिति के विपरीत हैं।

चरण 3: निष्कर्ष बात की चूड़ी मरने का अभिप्राय बात का प्रभावहीन हो जाना है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: चूड़ी के घिसने के बाद पेंच का व्यर्थ घूमना याद करें; इसी से बात का प्रभाव खोना स्पष्ट होगा।

6(ii). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : कथ्य के भाव या अभिव्यक्ति के अनुरूप ही भाषा का चुनाव करना चाहिए।

कारण : भाषा के शब्द-जाल में फँसकर कथ्य की जीवंतता और सार्थकता नष्ट हो जाती है।

[1 अंक]

(A) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।

(B) कारण सही है, लेकिन कथन गलत है।

(C) कथन सही है, लेकिन कारण, कथन की गलत व्याख्या करता है।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथ्य का आशय प्रभावी ढंग से पहुँचाने के लिए भाषा का चयन उसके भाव के अनुरूप होना चाहिए।
- कथन-कारण में दोनों की सत्यता के साथ उनके व्याख्यात्मक संबंध की भी जाँच होती है।

चरण 1: **कथन की सत्यता** कथन सही है। काव्यांश में कवि सहज बात को अनावश्यक रूप से कसता जाता है और उसका अर्थ खो जाता है। इससे स्पष्ट है कि भाषा कथ्य की आवश्यकता के अनुरूप चुनी जानी चाहिए।

चरण 2: **कारण की सत्यता** कारण भी सही है। शब्द-जाल में उलझकर कथ्य की जीवंतता और सार्थकता नष्ट होती है। बात की चूड़ी मरने और उसके बेकार घूमने का वर्णन इसी हानि को व्यक्त करता है।

चरण 3: **व्याख्यात्मक संबंध और विकल्प** कारण बताता है कि भाव के अनुकूल भाषा क्यों आवश्यक है: अनुचित भाषिक आडंबर बात का प्रभाव नष्ट कर देता है। अतः (D) सही है। (A) दोनों को गलत और (B) कथन को गलत बताता है; (C) सही कारण को गलत व्याख्या मानता है। ये तीनों काव्यांश से असंगत हैं।

चरण 4: **निष्कर्ष** कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहले कथन और कारण को अलग-अलग परखें, फिर देखें कि कारण भाषा-चयन की आवश्यकता समझाता है या नहीं।

6(iii). स्तंभ-I को स्तंभ-II से सुमेलित कीजिए तथा सही विकल्प चुनकर लिखिए :

स्तंभ-I	स्तंभ-II
1. पेंच खोलना	(i) कथ्य के माध्यम को सरल बनाना
2. बेतरह कसना	(ii) बात में कसावट का न होना
3. कील की तरह ठोंकना	(iii) भाषा को अलंकृत करना

[1 अंक]

(A) 1-(ii), 2-(i), 3-(iii)

(B) 1-(i), 2-(ii), 3-(iii)

(C) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii)

(D) 1-(i), 2-(iii), 3-(ii)

सही उत्तर: (D) 1-(i), 2-(iii), 3-(ii)

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश के पेंच संबंधी बिंब भाषा की सहजता, अनावश्यक सजावट और अभिव्यक्ति की विफलता बताते हैं।

- सुमेलन में प्रत्येक पद का प्रसंगगत आशय पहचानकर पूरा विकल्प जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: पहले दो पदों का मिलान पेंच खोलना उलझी हुई बात के माध्यम को सरल बनाना है, इसलिए 1 का संबंध (i) से है। बेतरह कसना सहज अभिव्यक्ति के स्थान पर भाषा को अनावश्यक रूप से अलंकृत और जटिल करना है, इसलिए 2 का संबंध (iii) से है।

चरण 2: तीसरे पद और विकल्पों की जाँच कील की तरह ठोकना बताता है कि बात को सहजता से कसने की क्षमता खो चुकी है; उसे जबरन स्थिर किया गया है। दिए गए अर्थों में यह बात में कसावट का न होना, अर्थात् 3-(ii), है। (A) और (C) पहले ही मिलान में गलत हैं। (B) पहले मिलान को सही रखता है, पर दूसरे और तीसरे को उलट देता है। (D) तीनों मिलान सही रखता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही सुमेलन है: 1-(i), 2-(iii), 3-(ii)। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहले पेंच खोलने को सरलता से जोड़ें, फिर अनावश्यक कसने को भाषिक अलंकरण से मिलाएँ।

6(iv). कवि भाषा को और अधिक तराशने में क्यों लगा रहा ?

[1 अंक]

- (A) भाषा का महत्त्व न जानने के कारण
- (B) आत्म-संतुष्टि प्राप्त न होने के कारण
- (C) संप्रेषणीय शब्द न मिलने के कारण
- (D) लोगों से मिलने वाली प्रशंसा के कारण

सही उत्तर: (D) लोगों से मिलने वाली प्रशंसा के कारण

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में बाहरी प्रशंसा का आकर्षण कवि को सहज अभिव्यक्ति से दूर ले जाता है।
- प्रश्न में कारण पूछा गया है, इसलिए उत्तर उस पंक्ति से तय होगा जहाँ कवि अपने व्यवहार की वजह बताता है।

चरण 1: निर्णायक पंक्तियों का अर्थ कवि को तमाशबीनों की शाबाशी और वाह-वाह साफ सुनाई दे रही थी। इस प्रशंसा के कारण वह अपने भाषिक करतब को जारी रखता है और बात को सहज करने के बजाय उसे और कसता जाता है।

चरण 2: चारों विकल्पों को परखना (D) लोगों की प्रशंसा को कारण बताता है, इसलिए वही पाठ से समर्थित है। (A) में भाषा का महत्त्व न जानने की बात है, जिसका यहाँ उल्लेख नहीं है। (B) की आत्म-संतुष्टि और (C) के संप्रेषणीय शब्दों का अभाव भी इन पंक्तियों में कारण नहीं बताए गए हैं। कवि की प्रेरणा सार्वजनिक वाह-वाह है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि लोगों से मिलने वाली प्रशंसा के कारण भाषा को और अधिक तराशने में लगा रहा। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: कारण वाले प्रश्न में शाबाशी और वाह-वाह जैसे संकेत-शब्द खोजें; वे सीधे सही विकल्प तक पहुँचाते हैं।

6(v). 'क्यों कि इस करतब पर मुझे' – पंक्ति में किस करतब की बात हो रही है ?

[1 अंक]

- (A) भाषा को अलंकृत करने की
 - (B) कथ्य को अलंकृत करने की
 - (C) कविता पाठ करने की
 - (D) पाठक और श्रोताओं को लुभाने की
- सही उत्तर:** (A) भाषा को अलंकृत करने की

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में करतब का अर्थ सहज बात को भाषिक सजावट और जटिलता में बदलने का प्रदर्शन है।
- पूर्ववर्ती पंक्तियाँ किसी संकेतवाचक पद के प्रसंगगत अर्थ को स्पष्ट करती हैं।

चरण 1: करतब का संदर्भ समझना इस पंक्ति से पहले कवि पेंच खोलने के बजाय उसे बेतरह कसने की बात करता है। यह भाषा को अनावश्यक रूप से सजाने-सँवारने और उलझाने का बिंब है। करतब इसी भाषिक प्रदर्शन को कहा गया है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना (A) भाषा को अलंकृत करना सीधे उसी प्रक्रिया को व्यक्त करता है। (B) कथ्य को अलंकृत करना कहता है, जबकि समस्या अभिव्यक्ति के माध्यम की है। (C) कविता-पाठ का उल्लेख नहीं है। (D) लोगों को लुभाने का परिणाम या उद्देश्य बताता है; प्रश्न में करतब के रूप में की जा रही क्रिया पूछी गई है। इसलिए (A) अधिक सटीक है।

चरण 3: निष्कर्ष यहाँ भाषा को अलंकृत करने के करतब की बात हो रही है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: करतब की पहचान के लिए पहले की क्रिया देखें; प्रशंसा उसके पीछे का आकर्षण है, स्वयं करतब नहीं।

7(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘कविता के बहाने’ कविता के संदर्भ में कविता और फूल के सौंदर्य का तुलनात्मक वर्णन करते हुए लिखिए कि किसका सौंदर्य अधिक है और क्यों ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता में फूल और कविता, दोनों आनंद और सौंदर्य के स्रोत हैं। तुलना का आधार उनके खिलने का विस्तार और स्थायित्व है।
- फूल का खिलना प्रकृति की सीमाओं में होता है; कविता का खिलना कल्पना, संवेदना और अर्थ की असीम संभावनाओं में होता है।

चरण 1: तुलना का आधार समझें कवि फूल के बहाने कविता की विशेषता स्पष्ट करता है। फूल अपने रंग, गंध और रूप से आकर्षित करता है, किंतु उसका जीवन सीमित है। कविता भी मन में सौंदर्य का अनुभव जगाती है, पर उसका प्रभाव किसी एक स्थान या समय तक सीमित नहीं रहता। यहाँ फूल को असुंदर नहीं बताया गया है; उसके सीमित खिलने से कविता के व्यापक खिलने की तुलना की गई है। कविता के नए पाठ में नए अर्थ खुलते हैं और अलग-अलग पाठक अपनी संवेदनाओं से उसका आस्वाद लेते हैं। इसीलिए कविता का खिलना फूल की तरह मुरझाकर समाप्त नहीं होता। तुलना में स्थूल रूप से अधिक आंतरिक अनुभूति का महत्त्व है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर फूल और कविता दोनों सौंदर्य तथा आनंद प्रदान करते हैं। किंतु फूल का सौंदर्य उसके रंग, गंध और सीमित जीवन तक रहता है। कविता का सौंदर्य भावों, कल्पना और अर्थों में निरंतर खिलता है। वह समय, स्थान और जीवन की सीमाएँ पार कर पाठकों के मन में नए अनुभव जगाता है। इसलिए कवि ने कविता के सौंदर्य को अधिक व्यापक और स्थायी माना है।

चरण 3: निष्कर्ष कविता का सौंदर्य अधिक व्यापक है, क्योंकि उसके अर्थ और प्रभाव फूल के जीवन जैसी सीमाओं में नहीं बँधते।

त्वरित सुझाव: तुलना में पहले दोनों की समानता लिखें, फिर फूल की सीमा और कविता के असीम विस्तार को स्पष्ट करें।

7(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘कैमरे में बंद अपाहिज’ कविता का अंत किस रूप में होता है ? क्या मीडियाकर्मी अपने उद्देश्य में सफल हो पाया ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता संवेदनहीन मीडिया की आलोचना करती है, जो दूसरे की पीड़ा को दर्शनीय कार्यक्रम में बदल देता है।
- कार्यक्रम का घोषित उद्देश्य पीड़ित की पीड़ा दिखाना है; वास्तविक प्रयास उसे रुलाकर दर्शकों की भावुकता को भुनाना है।

चरण 1: अंत और उद्देश्य का संबंध पहचानें कविता के अंत में संचालक समय समाप्त होने की बात कहकर कार्यक्रम बंद करता है और फिर मिलने की घोषणा करता है। अपाहिज की वास्तविक समस्या का समाधान नहीं होता। संचालक ने उससे निजी दुख उगलवाने, चेहरे की पीड़ा दिखाने और दर्शकों को भावुक करने की कोशिश की थी। उसके लिए मनुष्य से अधिक महत्त्व प्रसारण और प्रदर्शन का है। कविता का व्यंग्य संचालक की उस सोच पर है जो पीड़ा को समझने के बजाय उसका कैमरे पर प्रभाव चाहती है। पीड़ित की मानवीय गरिमा और उसकी सहायता कार्यक्रम की प्राथमिकता नहीं बनते। इस भेद को स्पष्ट करना उत्तर का आवश्यक तर्क है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कविता का अंत समय समाप्त होने पर कार्यक्रम बंद करने और फिर मिलने की घोषणा से होता है। यह संवेदनहीन मीडिया पर व्यंग्य है। मीडियाकर्मी अपाहिज को रुलाकर उसका दुख दर्शकों के सामने बेचने में पूरी तरह सफल नहीं होता। वह पीड़ित और दर्शक, दोनों से अपेक्षित आँसू नहीं पा सकता। इसलिए उसका संवेदना जगाने का दिखावा और व्यावसायिक उद्देश्य उजागर हो जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष अंत में कार्यक्रम समाप्त होता है; अपाहिज को रुलाने तथा दर्शकों से मनचाही भावुक प्रतिक्रिया पाने का उद्देश्य पूरा नहीं होता।

त्वरित सुझाव: अंत की घोषणा को केवल घटना न मानें; उसे अपाहिज की उपेक्षा और मीडिया की प्रदर्शनप्रियता से जोड़ें।

7(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘कवितावली’ में तुलसीदास जी ने पेट की आग की विशालता और भयावहता को किस प्रकार व्यक्त किया है ? स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास की कवितावली में भूख आजीविका के संकट और सामाजिक विवशता का मूल कारण बनकर सामने आती है।
- पेट की आग की तुलना समुद्र की बड़वाग्नि से की गई है; इस अतिशयोक्तिपूर्ण तुलना से भूख की प्रचंडता व्यक्त होती है।

चरण 1: काव्य के उदाहरणों से आशय समझें तुलसीदास विभिन्न व्यवसायों और कर्मों का उल्लेख करके बताते हैं कि मनुष्य पेट भरने के लिए अनेक उपाय करता है। भूख उसे अच्छे-बुरे कर्मों का विवेक छोड़ने और अपनी संतान तक बेचने की विवशता में पहुँचा देती है। इस प्रकार पेट की आग केवल शारीरिक कष्ट नहीं, नैतिक और सामाजिक संकट भी है। समुद्र की आग से भी बड़ा बताना इसकी विनाशक शक्ति को तीव्र बनाता है। कवि के लिए भूख की समस्या व्यक्तिगत आलस्य का परिणाम भर नहीं है। आजीविका की कठिनाई पूरे समाज को प्रभावित करती है। संतान का सौदा जैसी चरम विवशता दिखाती है कि भूख मनुष्य के सबसे गहरे पारिवारिक लगाव को भी संकट में डाल देती है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर तुलसीदास ने पेट की आग को समुद्र की बड़वाग्नि से भी बड़ी बताया है। भूख मिटाने के लिए लोग खेती, व्यापार, नौकरी, भीख तथा अच्छे-बुरे सभी कर्म करते हैं। इसकी विवशता इतनी भयावह है कि मनुष्य बेटा-बेटी तक बेच देता है। इस प्रकार कवि भूख की प्रचंडता और उससे उत्पन्न नैतिक पतन दिखाते हैं। रामरूपी घनश्याम की कृपा ही इसे शांत कर सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष समुद्र की बड़वाग्नि से तुलना और संतान बेचने की विवशता, भूख की विशालता तथा भयावहता को मूर्त करती हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में बड़वाग्नि की तुलना और भूख से विवश मनुष्य का एक ठोस उदाहरण अवश्य जोड़ें।

8(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘बादल राग’ कविता में कवि ने ऐसा क्यों कहा है कि ‘सदा पंक पर ही होता जल-विप्लव-प्लावन’ ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला की कविता में बादल क्रांति का और पंक दीन, पीड़ित तथा शोषित जनसमुदाय का प्रतीक है।
- प्राकृतिक दृश्य में जल का प्रवाह निचले स्थानों में होता है; प्रतीकात्मक अर्थ में परिवर्तन का सबसे गहरा प्रभाव वंचित वर्ग पर पड़ता है।

चरण 1: प्राकृतिक और सामाजिक संकेत समझें पंक अर्थात् कीचड़ धरातल के निचले हिस्से में होता है और वर्षा का जल वहीं भरता है। इसी दृश्य के माध्यम से कवि सामाजिक विषमता का संकेत करता है। दीन और शोषित लोगों में असंतोष तथा परिवर्तन की आकांक्षा तीव्र होती है। क्रांति का संबंध इन्हीं के जीवन से है; संपन्न वर्ग ऊँचे महलों में अपने को सुरक्षित समझता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर पंक निम्नवर्गीय, शोषित जनता का प्रतीक है। जैसे वर्षा का जल निचले स्थानों में भरता है, वैसे ही क्रांति का गहरा प्रभाव वंचितों पर पड़ता है। दुख और अभाव से पीड़ित यही वर्ग परिवर्तन की आकांक्षा रखता और क्रांति का आधार बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस पंक्ति में निचले धरातल का प्राकृतिक दृश्य शोषित जनजीवन और क्रांति के संबंध को व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: पंक का शाब्दिक अर्थ बताने के बाद उसका सामाजिक प्रतीक स्पष्ट करें; केवल वर्षा का वर्णन न करें।

8(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘बगुलों के पंख’ कविता से उद्धृत ‘उसे कोई तनिक रोक रक्खो’ पंक्ति से क्या आशय है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति का सौंदर्य कवि के मन पर गहरा प्रभाव डालता है।
- पंक्ति का आशय पक्षियों को सचमुच बाँधना नहीं, सुंदर दृश्य को देर तक अनुभव करने की इच्छा है।

चरण 1: दृश्य और मनःस्थिति पहचानना काले बादलों के बीच उड़ते सफेद बगुलों की पाँति कवि को अत्यंत सुंदर लगती है। श्वेत पंखों की चमक और बादलों की कालिमा का विरोध इस दृश्य को आकर्षक बनाता है। कवि का मन इस सौंदर्य में बँध जाता है और उसे देखते रहने की इच्छा करता है। यह रोकने का आग्रह दृश्य के प्रति भावात्मक लगाव को प्रकट करता है। उड़ते बगुलों के चलते दृश्य लगातार बदल रहा है; इसलिए उसे रोकने की इच्छा में सौंदर्य के क्षणभंगुर होने की अनुभूति भी निहित है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर काले बादलों के बीच उड़ते सफेद बगुलों का मनोहारी दृश्य कवि को मुग्ध कर देता है। वह चाहता है कि कोई इस उड़ती पाँति को थोड़ी देर रोक ले, ताकि वह इसके सौंदर्य को अधिक समय तक निहार सके।

चरण 3: निष्कर्ष इस पंक्ति में क्षणिक प्राकृतिक सौंदर्य को रोककर देर तक देखने की कवि की उत्कट इच्छा व्यक्त हुई है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में काले बादल, सफेद बगुलों की पाँति और सौंदर्य को देर तक निहारने की इच्छा जोड़ें।

8(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘पतंग’ कविता के संदर्भ में बच्चों और कपास के बीच का संबंध स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि ने बच्चों की कोमलता, हलकेपन और उत्साह को कपास की छवि से व्यक्त किया है।
- संबंध को कविता की शारीरिक गति और बालमन की निश्चलता के संदर्भ में समझना चाहिए।

चरण 1: कपास के गुणों से संबंध कपास हलकी और कोमल होती है। पतंग उड़ाते बच्चों का शरीर भी कवि को ऐसा ही हलका और लचीला लगता है। वे छतों पर दौड़ते, कूदते और आकाश की ओर देखते हुए खेल में इतने तल्लीन हैं कि उनके उत्साह में भारीपन या जड़ता दिखाई नहीं देती। यह उपमा बच्चों की नाजुकता के साथ उनकी चुस्ती भी दिखाती है। खेल में तल्लीन बालमन के लिए आकाश आकर्षण का केंद्र है; इसलिए उनके हलके शरीर की कल्पना पतंग की ऊर्ध्वगामी गति के अनुकूल बनती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर कविता में बच्चों के शरीर को कपास जैसा कोमल, लचीला और हलका बताया गया है। पतंग उड़ाते समय वे उमंग से भरकर दौड़ते-कूदते हैं। कपास की तरह उनका हलकापन और निश्चलता उन्हें बंधनमुक्त होकर आकाश छूने की कल्पना में डुबो देती है।

चरण 3: निष्कर्ष बच्चों और कपास का संबंध कोमलता, हलकेपन तथा मुक्त, उत्साहपूर्ण गति के आधार पर स्थापित हुआ है।

त्वरित सुझाव: कपास के हलकेपन को बच्चों के दौड़ने-कूदने और बालसुलभ मुक्त उत्साह से जोड़कर उत्तर दें।

9. जेठ की जलती धूप में, जब धरित्री निर्धूम अग्निकुंड बनी हुई थी, शिरीष नीचे से ऊपर तक फूलों से लद गया था। कम फूल इस प्रकार की गरमी में फूल सकने की हिम्मत करते हैं। कर्णिकार और आरग्वध (अमलतास) की बात मैं भूल नहीं रहा हूँ। वे भी आस-पास बहुत हैं। लेकिन शिरीष के साथ आरग्वध की तुलना नहीं की जा सकती। वह पंद्रह-बीस दिन के लिए फूलता है, वसंत ऋतु के पलाश की भाँति। कबीरदास को इस तरह पंद्रह दिन के लिए लहक उठना पसंद नहीं था। यह भी क्या कि दस दिन फूले और फिर खंखड़-के-खंखड़ – ‘दिन दस फूला फूलिके खंखड़ भया पलास !’ ऐसे दुमदारों से तो लँडूरे भले। फूल है शिरीष। वसंत के आगमन के साथ लहक उठता है, आषाढ़ तक जो निश्चित रूप से मस्त बना रहता है। मन रम गया तो भरे भादों में भी निर्घात फूलता रहता है। जब उमस से प्राण उबलता रहता है और लू से हृदय सूखता रहता है, एकमात्र शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता का मंत्र प्रचार करता रहता है। यद्यपि कवियों की भाँति हर फूल-पत्ते को देखकर मुग्ध होने लायक हृदय विधाता ने नहीं दिया है, पर नितांत ठूँठ भी नहीं हूँ। शिरीष के पुष्प मेरे मानस में थोड़ा हिल्लोल ज़रूर पैदा करते हैं।

[5 अंक]

9(i). “शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता का मंत्र प्रचार करता रहता है।” इस कथन के समर्थन में विकल्प है :

[1 अंक]

- (A) शिरीष के साथ और पेड़ों की तुलना नहीं हो सकती।
(B) शिरीष मन रमने पर भादों में भी फूलों से लदा रहता है।
(C) शिरीष के पेड़ों पर वसंत ऋतु में फूल आते हैं और आषाढ़ तक रहते हैं।
(D) अपनी अजेय जिजीविषा के कारण निःस्पृह भाव से प्रचंड गरमी में अविचल खड़ा रहता है।

सही उत्तर: (D) अपनी अजेय जिजीविषा के कारण निःस्पृह भाव से प्रचंड गरमी में अविचल खड़ा रहता है।

हल:

अवधारणा:

- अजेय जिजीविषा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जीवन का उत्साह बनाए रखने की शक्ति है।
- सही विकल्प को कथन के पूरे भाव का समर्थन करना चाहिए।

चरण 1: कथन का आधार गद्यांश में उमस और लू के बीच भी शिरीष का फूलते रहना बताया गया है। कालजयी अवधूत की उपमा उसकी अनासक्त मस्ती और विपरीत परिस्थितियों से हार न मानने की क्षमता स्पष्ट करती है। इसलिए प्रचंड गरमी में अविचल रहना कथन

का सबसे पूर्ण समर्थन है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) केवल तुलना की बात कहता है। (B) भादों में फूलने का एक उदाहरण और (C) फूलने की अवधि बताता है। ये जीवन की अजेयता का पूरा आशय व्यक्त नहीं करते। (D) अजेय जिजीविषा, निःस्पृहता और प्रतिकूल गरमी में स्थिरता को एक साथ स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: कालजयी अवधूत का अर्थ केवल लंबे समय तक फूलना न मानें; जिजीविषा और अनासक्त दृढ़ता देखें।

9(ii). 'दिन दस फूला' पंक्ति का प्रयोग किस संदर्भ में किया गया है ?

[1 अंक]

(A) पलाश के फूलों की अल्पायु का वर्णन करने के लिए

(B) जीवन की नश्वरता का उल्लेख करने के लिए

(C) शिरीष के फूलों को औरों से श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए

(D) जीवन की क्षणभंगुरता का उल्लेख करने के लिए

सही उत्तर: (A) पलाश के फूलों की अल्पायु का वर्णन करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- किसी उद्धरण का संदर्भ उसके पहले और बाद के वाक्यों से स्पष्ट होता है।
- यहाँ कबीर की पंक्ति थोड़े समय के लिए फूलकर फिर सूख जाने वाले पलाश के प्रसंग में आई है।

चरण 1: उद्धरण के निकट का संदर्भ लेखक पहले अमलतास के पंद्रह-बीस दिन फूलने की चर्चा करता है और उसकी तुलना वसंत के पलाश से करता है। फिर दस दिन फूलकर खंखड़ हो जाने की पंक्ति देता है। इस प्रकार उद्धरण सीधे पलाश के फूलों की अल्प अवधि को उजागर करता है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) उस सीधे संदर्भ को बताता है। (B) और (D) जीवन की नश्वरता संबंधी सामान्य दार्शनिक अर्थ हैं, जो यहाँ प्रत्यक्ष प्रसंग नहीं हैं। (C) पूरे अनुच्छेद की तुलनात्मक दिशा से जुड़ा है, किंतु उद्धृत पंक्ति का तत्काल संदर्भ पलाश का थोड़े समय तक फूलना ही है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है: पलाश के फूलों की अल्पायु का वर्णन करने के लिए।

त्वरित सुझाव: उद्धरण का संदर्भ पूछे जाने पर पूरे पाठ के उद्देश्य से पहले उसके ठीक पहले का वाक्य देखें।

9(iii). 'नितांत ठूँठ हृदय' से अभिप्राय है :

[1 अंक]

- (A) नीरस
- (B) सरस
- (C) कोमल
- (D) समृद्धिहीन

सही उत्तर: (A) नीरस

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग में प्रयुक्त विशेषण का अर्थ उसके भाव और विरोधी संकेतों से तय होता है।
- ठूँठ वृक्ष में हरियाली नहीं रहती; हृदय के लिए यह शब्द भावहीन नीरसता का संकेत है।

चरण 1: प्रसंग से अर्थ निकालना लेखक कहता है कि उसका हृदय हर फूल-पत्ते पर मुग्ध होने वाला नहीं है, किंतु वह बिल्कुल ठूँठ भी नहीं है। शिरीष के पुष्प उसके मानस में हिल्लोल पैदा करते हैं। इससे स्पष्ट है कि उसके मन में सौंदर्य अनुभव करने की कुछ सरसता विद्यमान है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) नीरस भावगत सूखेपन का सही अर्थ है। (B) सरस उसका विपरीत है। (C) कोमल संवेदनशीलता बताता है, ठूँठपन नहीं। (D) समृद्धिहीन आर्थिक या संसाधन संबंधी अभाव जता सकता है, जबकि यहाँ हृदय की भावात्मक स्थिति की चर्चा है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) नीरस है।

त्वरित सुझाव: ठूँठ हृदय का अर्थ निकालते समय मानस में हिल्लोल पैदा होने वाले अगले वाक्य से उसका विरोध समझें।

9(iv). निम्नलिखित में हिन्दी मास का नाम नहीं है :

[1 अंक]

- (A) ज्येष्ठ
- (B) आषाढ़
- (C) भाद्रपद
- (D) वसंत

सही उत्तर: (D) वसंत

हल:

अवधारणा:

- मास और ऋतु अलग काल-इकाइयाँ हैं।
- ज्येष्ठ, आषाढ़ और भाद्रपद मास हैं; वसंत ऋतु है।

चरण 1: प्रश्न की निषेधात्मक माँग प्रश्न उस नाम को चुनने के लिए कहता है जो हिंदी मास नहीं है। इसलिए केवल गद्यांश में किसी शब्द के आने से उसे मास नहीं मानना चाहिए। गद्यांश स्वयं वसंत के साथ ऋतु शब्द का प्रयोग करता है, जो उसका वर्ग स्पष्ट करता है।

चरण 2: चारों विकल्पों का वर्गीकरण (A) ज्येष्ठ एक मास है, जिसे बोलचाल में जेठ कहते हैं। (B) आषाढ़ भी मास का नाम है। (C) भाद्रपद मास है, जिसका प्रचलित नाम भादों है। अतः ये तीनों नहीं चुने जाएँगे। (D) वसंत एक ऋतु है; वह हिंदी मास का नाम नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (D) वसंत है।

त्वरित सुझाव: नहीं शब्द को पहले पहचानें और जेठ-ज्येष्ठ तथा भादों-भाद्रपद को एक ही मास के नाम मानें।

9(v). 'ऐसे दुमदारों से' लोकोक्ति का अर्थ गद्यांश के संदर्भ में है :

[1 अंक]

- (A) छोटी पूँछ होने से बेहतर है, न होना
 - (B) कम होने से बेहतर है, न होना
 - (C) कम साधनों से साधनहीनता अच्छी है
 - (D) अल्पावधि से अवधिहीनता अच्छी है
- सही उत्तर:** (B) कम होने से बेहतर है, न होना

हल:

अवधारणा:

- लोकोक्ति का अर्थ उसके प्रसंग में निहित तुलना से समझना चाहिए।
- दुमदार और लँडूरे की तुलना यहाँ थोड़े समय के आडंबरपूर्ण वैभव की निरर्थकता व्यक्त करती है।

चरण 1: प्रसंग का संकेत अमलतास और पलाश थोड़े समय फूलकर फिर सूखे रह जाते हैं। लेखक ऐसे क्षणिक प्रदर्शन पर व्यंग्य करता है। लोकोक्ति का भाव है कि ऐसा थोड़ा-सा, टिक न सकने वाला वैभव होने की अपेक्षा उसका न होना बेहतर है। यहाँ वास्तविक पूँछ की चर्चा नहीं है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) पूँछ का शाब्दिक अर्थ लेता है, इसलिए भावार्थ नहीं बताता। (C) इसे साधनों के अभाव तक सीमित करता है, जबकि प्रसंग फूलने की क्षणिकता का है। (D) अवधिहीनता को अच्छा बताता है, जो कथन का सटीक अर्थ नहीं है। (B) कम होने से बेहतर न होना सामान्य आशय व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है: कम होने से बेहतर है, न होना।

त्वरित सुझाव: लोकोक्ति में पूँछ का शाब्दिक अर्थ छोड़कर थोड़े दिन के फूलने पर किए गए व्यंग्य को पहचानें।

10(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

“तर्क-वितर्क करने की कला का शिक्षा से कोई संबंध नहीं है।” भक्तिन के व्यक्तित्व के आधार पर इस कथन की पुष्टि कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भक्तिन का तर्क कौशल उसकी व्यावहारिक बुद्धि और अनुभव से उपजता है। औपचारिक शिक्षा का अभाव उसे अपने पक्ष का समर्थन करने से नहीं रोकता।
- चरित्र पर आधारित उत्तर में किसी सामान्य प्रशंसा के बजाय पाठ की ठोस घटना देकर कथन की पुष्टि करनी चाहिए।

चरण 1: कथन का आधार पहचानिए यहाँ शिक्षा से आशय औपचारिक पढ़ाई है। भक्तिन निरक्षर होते हुए भी अपनी मान्यताओं और आचरण के पक्ष में चतुर तर्क देती है। वह दूसरों की आपत्ति के सामने चुप नहीं होती, बल्कि अनुभव और सुनी हुई बातों को अपने अनुकूल प्रस्तुत करती है। इस उदाहरण में शास्त्रीय प्रमाण की सत्यता जाँचना प्रश्न का उद्देश्य नहीं है; भक्तिन उसे अपने पक्ष को मजबूत करने के लिए सामने लाती है। लेखिका के सामने उसका आत्मविश्वास और प्रत्युत्तर देने की तत्परता महत्वपूर्ण है। अतः शिक्षा और तर्क में अनिवार्य संबंध न होने की पुष्टि इसी विशिष्ट व्यक्तित्व से कीजिए, शिक्षा को निरर्थक सिद्ध करने का प्रयास मत कीजिए।

चरण 2: पाठ का प्रमाण और उत्तर भक्तिन अनपढ़ थी, फिर भी तर्क करने में निपुण थी। सिर मुँड़वाने से रोकने पर उसने शास्त्र का हवाला देकर कहा कि तीरथ गए मुँड़ाए सिद्ध। अपने बदले हुए नाम और दूसरे व्यवहारों को उचित ठहराने के लिए भी वह अपनी तरह से कारण देती थी। इससे स्पष्ट है कि तर्क कौशल केवल पुस्तकीय शिक्षा से नहीं, अनुभव और व्यावहारिक बुद्धि से भी विकसित होता है।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन की अनुभवजन्य बुद्धि और अपनी बात मनवाने की क्षमता उक्त कथन की पुष्टि करती है।

त्वरित सुझाव: पहले भक्तिन की निरक्षरता बताइए, फिर सिर मुँड़वाने का प्रसंग जोड़कर उसकी तर्कक्षमता सिद्ध कीजिए।

10(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

“जहाँ तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहाँ उस बल का बीज नहीं है।” कथन का आशय स्पष्ट करते हुए लिखिए कि ‘बाज़ार दर्शन’ पाठ में यह बात किस संदर्भ में कही गई है।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पाठ में आत्मसंयम और संतोष को बाज़ार के आकर्षण से बचाने वाला आंतरिक बल माना गया है।
- कथन का संदर्भ भगत जी का चूरन बेचने का व्यवहार है; धन की मात्रा और मन की शक्ति को एक नहीं समझना चाहिए।

चरण 1: आंतरिक बल का अर्थ समझिए जिस मन में अधिक पाने और जमा करने की लालसा रहती है, वह प्रलोभनों के सामने निर्बल पड़ता है। संतुष्ट व्यक्ति अपनी आवश्यकता पहचानता है और अनावश्यक वस्तुओं का आकर्षण उस पर हावी नहीं होता। यहाँ बल का संबंध इसी आत्मसंयम से है। भगत जी की सीमित कमाई उनकी विवशता नहीं, संतोष की पहचान है। वे ग्राहक मिलते रहने पर भी धन बढ़ाने की होड़ में नहीं पड़ते। उनके मन की स्पष्टता उन्हें अपनी जरूरत पर टिकाए रखती है। इसलिए कथन में वर्णित बल कोई शारीरिक शक्ति या धनबल नहीं, इच्छा पर नियंत्रण रखने की नैतिक शक्ति है। प्रसंग और आशय दोनों साथ लिखने से उत्तर पूर्ण होता है।

चरण 2: संदर्भ सहित उत्तर यह कथन चूरन बेचने वाले भगत जी के संदर्भ में कहा गया है। वे प्रतिदिन छह आने कमाने के बाद बचा चूरन बच्चों को मुफ्त बाँट देते हैं। अधिक कमाने का अवसर भी उन्हें विचलित नहीं करता। तृष्णा और संग्रह की लालसा मनुष्य को प्रलोभनों का दास बनाती है; उनसे मुक्ति ही भगत जी जैसा आत्मबल और बाज़ार के आकर्षण से निर्लिप्तता देती है।

चरण 3: निष्कर्ष भगत जी का संतोष उस आत्मबल का उदाहरण है जिसका बीज लालच और संग्रह की इच्छा में नहीं हो सकता।

त्वरित सुझाव: कथन का आशय लिखने के बाद छह आने की कमाई और बचा चूरन बाँटने का उदाहरण अवश्य जोड़िए।

10(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

जेठ के दसतपा और आषाढ़ का पहला पखवारा बीत जाने पर भी बारिश न होने पर ‘काले मेघा पानी दे’ पाठ में गाँव वालों द्वारा क्या-क्या उपाय किए गए ? उन उपायों को आप कितना उचित मानते हैं ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनावृष्टि के संकट में ग्रामीणों के धार्मिक अनुष्ठान और इंदर सेना की गतिविधियाँ लोकविश्वास को प्रकट करती हैं।
- तर्कपूर्ण मूल्यांकन में सामूहिक आशा और जल की बर्बादी को अलग समझना चाहिए; अनुष्ठान को वर्षा का वैज्ञानिक कारण नहीं कहना चाहिए।

चरण 1: उपाय और मूल्यांकन व्यवस्थित कीजिए उत्तर में पहले पूजा-पाठ और कथा-विधान का उल्लेख हो, फिर अंतिम उपाय के रूप में इंदर सेना का वर्णन हो। उचित-अनुचित का निर्णय देते हुए आस्था से मिलने वाली मानसिक सहायता को स्वीकार किया जा सकता है, पर जलसंकट में पानी फेंकने का समर्थन आवश्यक नहीं है। लंबे सूखे में कुओं का जल भी घटने लगता है और मनुष्य तथा पशु प्यास से व्याकुल होते हैं। ऐसी परिस्थिति में बचाकर रखा पानी मूल्यवान होता है। इसलिए इंदर सेना की गतिविधि का मूल्यांकन करते हुए लोकजीवन की भावनाओं को समझना चाहिए, साथ ही वर्षा के लिए प्राकृतिक प्रक्रियाओं और संकट के लिए विवेकपूर्ण व्यवहार का महत्व स्पष्ट रखना चाहिए।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर वर्षा न होने पर गाँव वालों ने पूजा-पाठ और कथा-विधान किए। अंत में इंदर सेना के लड़के घर-घर जाकर पानी माँगते, अपने ऊपर पानी डलवाते और कीचड़ में लथपथ होकर मेघों को पुकारते थे। इन उपायों से सामूहिक आशा अवश्य बनी रहती थी, किंतु वर्षा होने का वैज्ञानिक आधार नहीं था। जलसंकट में पानी बहाने के स्थान पर उसका संरक्षण अधिक उचित होता।

चरण 3: निष्कर्ष ये उपाय लोकआस्था और सामूहिक आशा के प्रतीक हैं, पर जलसंकट का उचित व्यावहारिक उत्तर जलसंरक्षण है।

त्वरित सुझाव: दोनों माँगें पूरी कीजिए: पहले पूजा-पाठ और इंदर सेना के उपाय, फिर जलसंरक्षण के आधार पर अपना मत लिखिए।

11(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

हैजे और मलेरिया से पीड़ित गाँव की स्थिति का वर्णन 'पहलवान की ढोलक' पाठ के अनुसार अपने शब्दों में कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में महामारी का चित्रण बीमारी के साथ गरीबी, मृत्यु और निराशा को सामने लाता है।
- गाँव का वर्णन करते समय पाठ के वातावरण से जुड़े ठोस संकेत चुनिए; प्रश्न केवल गाँव की दशा का है।

चरण 1: वातावरण के प्रमुख संकेत चुनिए गाँव में हैजे और मलेरिया का प्रकोप था। निर्धनता तथा भूख ने लोगों की रोग से लड़ने की शक्ति भी घटा दी थी। रात का सन्नाटा और बीच-बीच में उठता करुण रुदन महामारी की भयावहता प्रकट करते हैं। यह स्थिति केवल किसी एक परिवार का निजी दुख नहीं, पूरे गाँव का सामूहिक संकट है। इसलिए संक्षिप्त उत्तर में किसी एक पात्र की जीवनी के बजाय रोग, असहायता और शोकपूर्ण वातावरण पर ध्यान केंद्रित रखिए।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर हैजे और मलेरिया से गाँव में मृत्यु का आतंक छाया था। भूख और गरीबी से दुर्बल लोग असहाय थे। घरों में करुण रुदन उठता और रात को भयावह सन्नाटा छा जाता। चारों ओर निराशा थी तथा लोग अपने स्वजनों को खो रहे थे।

चरण 3: निष्कर्ष महामारी, निर्धनता और मृत्यु के भय ने गाँव को शोक तथा निराशा में डुबो दिया था।

त्वरित सुझाव: रोगों के नाम लिखकर भूख, मृत्यु का भय, करुण रुदन और रात के सन्नाटे में से प्रमुख संकेत जोड़िए।

11(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘भक्तिन’ पाठ के आधार पर लिखिए कि महादेवी जी के घर आने वाले साहित्यकारों के प्रति भक्तिन के सम्मान का क्या मापदंड था ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा के संस्मरण में भक्तिन का मूल्यांकन आत्मीय व्यवहार पर आधारित है। वह साहित्यिक प्रसिद्धि की अपेक्षा लेखिका के प्रति अतिथि के स्नेह को महत्त्व देती है।
- प्रश्न में साहित्यकारों की उपलब्धियाँ नहीं, भक्तिन के सम्मान का निजी मापदंड स्पष्ट करना है।

चरण 1: सम्मान का आधार समझिए भक्तिन स्वयं साहित्यिक आलोचक नहीं थी। इसलिए रचनाओं की गुणवत्ता, पद या यश के आधार पर साहित्यकारों का क्रम तय नहीं करती थी। महादेवी के साथ किसी का व्यवहार कितना आत्मीय था, यही उसके लिए निर्णायक था।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर भक्तिन के लिए साहित्यकारों के सम्मान का मापदंड उनकी प्रसिद्धि अथवा साहित्यिक प्रतिभा नहीं था। महादेवी जी के प्रति जो जितना स्नेह और आत्मीयता रखता था, वह उतना ही सम्माननीय था। वह उसी अनुपात में उसका स्वागत और आदर करती थी।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन साहित्यकारों का सम्मान महादेवी जी के प्रति उनके स्नेह की मात्रा के अनुसार करती थी।

त्वरित सुझाव: उत्तर में ‘महादेवी के प्रति स्नेह और आत्मीयता’ अवश्य लिखिए; केवल अतिथि-सत्कार कहना पर्याप्त नहीं है।

11(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘श्रम विभाजन और जाति प्रथा’ पाठ के आधार पर लिखिए कि श्रम विभाजन की क्या आवश्यकता है ? पाठ में इसकी किस कमी की ओर संकेत किया गया है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आधुनिक सभ्य समाज में अनेक प्रकार के कार्य होते हैं। उनके सुचारु संचालन के लिए श्रम-विभाजन आवश्यक है।
- आबेडकर श्रम-विभाजन के विरोधी नहीं हैं; वे जन्म पर आधारित श्रमिक-विभाजन और उसके ऊँच-नीच वाले रूप का विरोध करते हैं।

चरण 1: आवश्यकता और दोष में अंतर कीजिए विभिन्न कामों के लिए अलग-अलग दक्षताओं की आवश्यकता होती है। इसलिए कार्यों का विभाजन उपयोगी है। किंतु जाति-प्रथा व्यक्ति की रुचि, क्षमता और प्रशिक्षण के स्थान पर माता-पिता की सामाजिक स्थिति से उसका व्यवसाय निर्धारित करती है। इसमें पेशा बदलने की स्वतंत्रता बाधित होती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर सभ्य समाज के विविध कार्यों को व्यवस्थित और कुशलतापूर्वक चलाने के लिए श्रम-विभाजन आवश्यक है। किंतु जाति-प्रथा में यह जन्माधारित श्रमिक-विभाजन बन जाता है। इसमें रुचि और योग्यता की उपेक्षा, ऊँच-नीच का भेद तथा व्यवसाय बदलने की स्वतंत्रता का अभाव है।

चरण 3: निष्कर्ष आवश्यक श्रम-विभाजन की कमी उसका जाति के आधार पर कठोर, असमान और जन्मनिर्धारित बन जाना है।

त्वरित सुझाव: पहले श्रम-विभाजन की उपयोगिता लिखिए, फिर जाति-आधारित श्रमिक-विभाजन का दोष स्पष्ट कीजिए।

12(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

‘हम पुरानी चाल के, हमारी घड़ी पुरानी चाल की’ – ‘सिल्वर वैडिंग’ कहानी में पंतजी द्वारा यह कथन किस संदर्भ में कहा गया ? इस कथन के आलोक में पंतजी की किन्हीं चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी में यशोधर पंत का पुरानी घड़ी से लगाव उनकी जीवन-दृष्टि और बदलते परिवेश के बीच दूरी को प्रकट करता है।
- चरित्र की विशेषताओं को कहानी के व्यवहार से प्रमाणित करना चाहिए। कथन का संदर्भ और उससे जुड़ी चार विशेषताएँ उत्तर के आवश्यक अंग हैं।

चरण 1: कथन का संदर्भ दफ्तर में सहकर्मी चट्टा पंतजी की पुरानी कलाई-घड़ी देखकर उसे बदलकर जापानी डिजिटल घड़ी लेने का सुझाव देता है। पंतजी बताते हैं कि घड़ी उन्हें विवाह में मिली थी। इसी प्रसंग में वे अपनी और घड़ी की पुरानी चाल का उल्लेख करते हैं। घड़ी की उपयोगिता के साथ उससे जुड़ी वैवाहिक स्मृति भी उनके लिए महत्वपूर्ण है।

चरण 2: चार विशेषताओं का आधार पहली विशेषता परंपराप्रियता है; वे किशनदा से मिले जीवन-संस्कारों को मानते हैं। दूसरी सादगी और मितव्ययिता है; केवल नए फैशन के लिए उपयोगी घड़ी बदलना आवश्यक नहीं समझते। तीसरी भावुकता है; विवाह में मिली वस्तु से उनका आत्मीय संबंध है। चौथी अनुशासनप्रियता और समयनिष्ठा है; वे अपनी घड़ी नियमित रूप से रेडियो समाचारों के समय से मिलाते हैं। इन विशेषताओं से उनका पुरानी जीवन-पद्धति से जुड़ाव स्पष्ट होता है।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में उत्तर दफ्तर में चट्टा ने पंतजी की पुरानी कलाई-घड़ी देखकर उन्हें जापानी डिजिटल घड़ी खरीदने का सुझाव दिया। पंतजी ने बताया कि यह घड़ी उन्हें विवाह में मिली थी और उक्त कथन कहा। इससे उनकी चार विशेषताएँ प्रकट होती हैं। वे परंपराप्रिय हैं और किशनदा के संस्कारों से जुड़े हैं। वे सादगी तथा मितव्ययिता पसंद करते हैं; फैशन के लिए उपयोगी वस्तु नहीं बदलते। वे भावुक हैं, इसलिए विवाह की स्मृति सँजोए हैं। वे समयनिष्ठ और अनुशासनप्रिय भी हैं; अपनी घड़ी रेडियो समाचारों से नियमित मिलाते हैं। इस प्रकार पुरानी घड़ी उनके व्यक्तित्व और जीवन-मूल्यों का प्रतीक है।

चरण 4: निष्कर्ष यह कथन पुरानी घड़ी बदलने के सुझाव पर कहा गया था। इससे पंतजी की परंपराप्रियता, सादगी-मितव्ययिता,

भावुकता तथा समयनिष्ठ अनुशासनप्रियता उजागर होती हैं।

त्वरित सुझाव: संदर्भ में चट्टा का डिजिटल घड़ी लेने का सुझाव लिखिए और प्रत्येक विशेषता के साथ कहानी का एक ठोस प्रमाण जोड़िए।

12(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

‘जूझ’ कहानी में छात्रों को अनुशासन में रखने के लिए अध्यापकों द्वारा दिए जाने वाले शारीरिक दंड का भी उल्लेख किया गया है। आपकी दृष्टि में छात्रों के साथ इस प्रकार का व्यवहार कहाँ तक उचित है ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। वर्तमान में इसमें क्या परिवर्तन आया है ?

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस प्रश्न में ‘जूझ’ के विद्यालयी परिवेश के आधार पर शारीरिक दंड की उचितता का तर्कपूर्ण मूल्यांकन और वर्तमान शिक्षा की दिशा का विवेचन अपेक्षित है।
- अनुशासन का उद्देश्य विद्यार्थी को भयभीत करना नहीं, बल्कि आत्मसंयम, जिम्मेदारी और सीखने के प्रति रुचि विकसित करना है। उत्तर में दंड के दुष्परिणाम तथा सकारात्मक विकल्प दोनों रखने चाहिए।

चरण 1: पाठ का संदर्भ और विचार का आधार ‘जूझ’ में शिक्षा प्राप्त करने के लिए संघर्षरत बालक का अनुभव केंद्रीय है। विद्यालय में छात्रों को अनुशासन में रखने के लिए शारीरिक दंड दिए जाने का उल्लेख उस समय की कठोर शिक्षा-पद्धति का संकेत करता है। इसका उल्लेख करना उस व्यवहार को उचित ठहराना नहीं है। मूल्यांकन विद्यार्थी की गरिमा, मानसिक सुरक्षा और शिक्षा के उद्देश्य के आधार पर करना चाहिए।

चरण 2: तर्क और वर्तमान परिवर्तन की रूपरेखा उत्तर में स्पष्ट मत दें कि मार से तात्कालिक चुप्पी मिल सकती है, स्थायी आत्मानुशासन नहीं। भय, अपमान और आत्मविश्वास में कमी सीखने को बाधित करते हैं। वर्तमान परिवर्तन के अंतर्गत बालकेंद्रित शिक्षा, संवाद, परामर्श और सकारात्मक प्रोत्साहन का उल्लेख करें। सभी विद्यालयों में दंड समाप्त हो गया है, ऐसा निराधार दावा न करें।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर ‘जूझ’ में उल्लिखित शारीरिक दंड उस समय की कठोर अनुशासन-पद्धति दर्शाता है। मेरी दृष्टि में विद्यार्थियों को मारना अनुचित है। इससे भय और अपमान पैदा होते हैं, आत्मविश्वास घटता है तथा पढ़ाई से अरुचि हो सकती है। भय से आया अनुशासन स्थायी नहीं होता। शिक्षक को गलती का कारण समझकर संवाद, स्नेह और उचित मार्गदर्शन से सुधार करना चाहिए। वर्तमान में बालकेंद्रित शिक्षा और बच्चों की गरिमा पर अधिक बल दिया जाता है। शारीरिक दंड को अस्वीकार्य माना जाता है तथा परामर्श, सकारात्मक प्रोत्साहन और सहभागिता को प्राथमिकता मिलती है। फिर भी इस दृष्टिकोण को व्यवहार में पूरी तरह अपनाना आवश्यक है।

चरण 4: निष्कर्ष शारीरिक दंड शिक्षा का उचित साधन नहीं है। ‘जूझ’ के संदर्भ में उसका आलोचनात्मक मूल्यांकन करते हुए स्नेह, संवाद और आत्मानुशासन पर आधारित वर्तमान शैक्षिक दृष्टि को स्पष्ट करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: उत्तर में तीन बातें अवश्य रखें : पाठ का संदर्भ, शारीरिक दंड के विरुद्ध कारण और आज अपनाए जा रहे सकारात्मक विकल्प।

12(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

सिंधु घाटी सभ्यता के आधार पर सिद्ध कीजिए कि हमारे पूर्वज आज के इंजीनियरों से जल का प्रबंधन करना कहीं बेहतर जानते थे।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न 'अतीत में दबे पाँव' में वर्णित सिंधु सभ्यता की नगर-योजना और जल-व्यवस्था के आधार पर पूर्वजों की तकनीकी समझ का मूल्यांकन करता है।
- जल-प्रबंधन में जल प्राप्त करने के साधनों के साथ स्नान की सुविधाएँ, दूषित जल की निकासी, निर्माण की टिकाऊ तकनीक और सफाई की व्यवस्था भी सम्मिलित हैं।

चरण 1: पाठ से ठोस प्रमाण चुनें मोहनजोदड़ो के घरों के कुएँ और स्नानघर जल की सुलभता तथा स्वच्छता का प्रमाण हैं। घरों से निकलने वाली नालियाँ मुख्य नालियों से जुड़ी थीं और नालियाँ ढकी रहती थीं। महान स्नानागार का पक्का निर्माण और जल का रिसाव रोकने की व्यवस्था सामूहिक उपयोग की सुविचारित योजना दर्शाते हैं। इन्हीं पाठाधारित उदाहरणों को उत्तर का आधार बनाएँ।

चरण 2: तुलना का तर्क स्पष्ट करें प्राचीन उपलब्धियों को केवल पुरानी होने के कारण श्रेष्ठ नहीं कहना है। साधनों की सीमा के बावजूद नगर के स्तर पर जल की उपलब्धता, स्वच्छता और निकासी को एक साथ व्यवस्थित करना उनकी दूरदर्शिता दिखाता है। आज के अनेक नगरों में जलभराव और अवरुद्ध नालियों की समस्या से तुलना करके प्रश्न में निहित प्रशंसा को तर्क मिलता है। हर आधुनिक अभियंता को अयोग्य घोषित करना आवश्यक नहीं है।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर 'अतीत में दबे पाँव' में वर्णित मोहनजोदड़ो की जल-व्यवस्था हमारे पूर्वजों की सूझबूझ प्रमाणित करती है। घरों में कुएँ और स्नानघर थे। घरों का गंदा पानी छोटी नालियों से मुख्य नालियों तक पहुँचता था। ढकी हुई नालियाँ स्वच्छता बनाए रखने में सहायक थीं। महान स्नानागार का पक्का निर्माण और पानी का रिसाव रोकने की व्यवस्था उनकी तकनीकी दक्षता दिखाती है। उन्होंने जल की उपलब्धता, उपयोग और निकासी को नगर-योजना का अभिन्न अंग बनाया था। आज अनेक नगर जलभराव और अवरुद्ध नालियों से जूझते हैं। इस तुलना में सीमित साधनों के बावजूद पूर्वजों की समग्र योजना, स्वच्छता-बोध और दूरदर्शिता अधिक प्रभावशाली दिखाई देती है।

चरण 4: निष्कर्ष कुओं, स्नानघरों, ढकी नालियों और महान स्नानागार की सुव्यवस्थित योजना सिद्ध करती है कि सिंधु सभ्यता में जल-प्रबंधन को नगर के स्वास्थ्य और सामूहिक जीवन से जोड़कर देखा जाता था।

त्वरित सुझाव: श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए केवल प्रशंसा न लिखें; कुएँ, ढकी नालियाँ और महान स्नानागार जैसे ठोस प्रमाण देकर उनका उपयोग समझाएँ।